"प्रथम गुच्छ"

मोहन-मोहिनी

बालविवाह कुरीति विषयक उपदेशप्रद

मनोरंजक ३ अङ्की नाटक।

लेखक और प्रकाशक—

पं० चतुर्वेदी कन्हैयालालात्मज

लक्ष्मीनारायण का० चतुर्वेदी

(रामपुरा हो० स्टेट निवासी)

हेडमास्टर "श्री गोदावत स्कूल"

हिन्दी अध्यापक "श्री गोदावत जैन गुरुकुल"

पोष्ट-छोटी सादड़ी ।(मेवाड़)

प्रथमावृत्ति १००० } सं० १९८६ वि० } मूल्य ।)

पंडित—चूड़ामणि चतुर्वेदी के प्रबन्ध से
"मोहन प्रेस" इटावा में छपी।

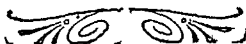




मेरे मित्र पंडित लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी जी ने यह नाटक 'भूमिका लिखने के लिये भेजा था'। मैं इस योग्य नहीं हूँ कि कुछ लिख सकूँ। किंतु यह नाटक बड़ा ही रोचक है। भारत का अधःपतन बाल और वृद्धविवाह द्वारा ही हुआ है और उस का उत्थान भी इन दोनों दुर्गुणों के नाश होते ही हो सकता है॥ 'चतुर्वेदी जी ने बाल और वृद्धविवाह के चित्र बड़े ही स्पष्ट दिखलाये हैं और वे इतने हृदयस्पर्शी हैं कि नाटक के पढ़ने वाले तथा देखने वालों का हृदय एक बेर तो अवश्य ही दहल उठेगा यदि यह नाटक खेला जायगा तो यह बड़ा ही परिणामकारक होगा।

आशा है कि भारत के तरुणपीढ़ी के लोग इस नाटक को अपना करके चतुर्वेदी जी को उत्साहित करके, उनसे इस से भी अधिक उपयोगी कार्य समाज तथा साहित्य का करा लेंगे॥

उज्जैन। } दिनकर गंगाधर गोरे
१६-८-२६ ई० } बी० ए०



॥ श्रीहरिः ॥

"मेरा वक्तव्य"



प्रिय पाठकों ! आज से कुछ वर्ष पहिले मैंने एक सामाजिक 'कमल-प्रभा' नामक नाटक लिखना प्रारम्भ किया था किंतु वह कई अनिवार्य कारणों से अपूर्ण ही पड़ा है। यह निश्चित था कि उसके प्रकाशित होने के प्रथम ही कोई अन्य पुस्तक आपके कर-कमलों में पहुँचेगी। अस्तु—

प्रस्तुत पुस्तक लिखने का यह कारण उपस्थित हुआ कि 'गिरा माघकृष्ण अमावस्या सं० १९८४ ता० २२ जनवरी सन् १९२८ वर्ष ३ संख्या २५ के तत्समय के बनारस से प्रकाशित प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'श्रीकृष्ण-सन्देश' में (आजकल समय में उक्त पत्र काशी से प्रकाशित होता है) "नवीन उपहार" नामक शीर्षक में एक सूचना श्री बाबू जवाहरलाल जी खत्री के हस्ताक्षर युक्त इस आशय की छपी कि 'बाल विवाह से हानि' इस विषय पर एक सुन्दर पद्यों का नाटक लिखने वाले महाशय को वर्ष भर 'श्रीकृष्ण सन्देश' तथा कुछ पुस्तकें उपहारस्वरूप दी जायगी। सर्वोत्तम नाटक कौन है इसका निर्णय 'श्रीकृष्ण सन्देश' का सम्पादक मण्डल करेगा आदि।

उस समय मैंने भी शान्तता से उपर्युक्त विषय पर 'मोहन मोहनी' नामक पत्रों की नाटक लिखकर बनारस भेज दिया। कुछ माह के पश्चात् श्रीमान् जवाहरलाल जी ओझा का एक पत्र प्राप्त हुआ उसमें उन्होंने लिखा 'कि 'बाल विवाहसे हानि' इस विषय पर जितने नाटक आये उन सबों में आपकी कृति पसन्द की गई है, निश्चित पुरस्कार आपको मिल जायगा आदि।

प्रथम उपर्युक्त नाटक पत्रोंको ही लिखा गया था तत्पश्चात् यही तीन अंकों कर दिया है, कुछ स्थानों पर गायन आदि भी नूतन रख दिये गये हैं। इससे आशा है कि आप लोगों की अभिरुचि की वृद्धि के साथ ही नाटक की सौन्दर्य वृद्धि भी होगी।

नाटकके नायक "मोहन" और नायिका "मोहिनी" का परस्पर विवाह बाल्यावस्था में ही होजाता है। विवाह के प्रथम का हृष्ट पुष्ट बलिष्ठ, मेधावी और मधुरभाषी मोहन, विवाह के कुछ वर्षों बाद ही अशक्त, रोगी और प्रतिभाहीन होजाने के कारण दाम्पत्य प्रेम में न्यूनता आजाती है। संसार सुख स्वप्न तुल्य हो जाता है। मोहिनी के हार्दिक भाव जिस बगीचे में जब वह अपने पिता के घर डाक्टरों की सम्मति से भेज दी जाती है उस समय सहेलियों के सम्मुख प्रकट होते हैं। कुछ समय पहिले दुःशील युवकों के कपटपाश में फँसने के अवसर ... से ही सतीत्व रक्षा तो अवश्य होजाती है किंतु

लोक-लज्जा तथा कुल कलंक के भय से आत्म हत्या कर लेती है बीमारी असाध्य हो जाने से मोहन भी प्राण त्याग करता है।

स्वास्थ्य रक्षा के महत्व को दृष्टि में न रखने के कारण इस प्रकार की दुखद और भीषण घटना घटानी पड़ी है। साम्प्रत समय में तो इस प्रकार की दुःखिनी अबलायें कुरीतियों द्वारा सताई जाकर कुछ को छोड़ अधिक संख्या में नर्क यन्त्रणायें भोग भोगा रही हैं। बाल विवाह से क्या हानियाँ होती हैं वे थोड़े शब्दों में इस प्रकार हैं –इसके-द्वारा बालक बालिकायें निस्तेज, निर्वीर्य अशक्त हो जाते हैं। कई प्रकार के असाध्य रोग उनके शरीर में प्रवेश कर उन्हें हतवीर्य कर उन का सर्वनाश कर देते हैं। बालिका पत्नियाँ शीघ्र ही विधवायें होजाती हैं। ऐसी स्थिति में वे बाल हत्या, भ्रूणहत्या करें, मुसलमान, ईसाई विधर्मी बन अपने दोनों कुलों को कलंक लगावें, लाखों की संख्या में वेश्यायें बनें और शहरों में कोठों को आबाद कर देशवासियों का नतमस्तक होने को बाध्य कर, कुरीतियों के भीषण परिणाम का दृष्टांत बतावें तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं उनका विशेष दोष नहीं। पूर्ण दोष तो है उन उन पालकों का जो कि विवेक शून्य हो निज अबोध बालिकाओं को कुरीति की बलि वेदी पर आँख मूँदकर बलिदान कर देते हैं। हा! शोक! शोक! महाशोक!!

अब हम निम्नांकित अंक इसलिये लिखे देते हैं कि भारत की सामाजिक दशा अन्य देशों के मुकाबिले में कैसी है?

आशा है कि विचारवान् पाठक साम्प्रत समय की परिस्थिति का मनोयोगपूर्वक मनन करेंगे।

हमारे देश भारतवर्ष में सन् १९२१ ई० की मनुष्यगणना के अनुसार पुरुषों की कुल संख्या १६३९९५५५४ और स्त्रियों की संख्या कुल १५४९४६९२६, दोनों मिला कर कुल ३१८९४२४८० है।

सन् १९११ की मनुष्य गणना (All India census report 1911) के अनुसार बाल पत्नियां और बाल विधवायें उनकी आयु सहित इस प्रकार थीं।

वर्ष आयु	बाल पत्नी	बाल विधवायें
० से १ वर्ष तक	१३२१२	१०१४
१ से २ „	१७७५३	८५६
२ से ३ „	४९७८७	१८०७
३ से ४ „	८७५०८	४५५३
४ से ५ „	१३४१०५	९२७३
५ से १० „	२२१९७७८	१४२७०
१० से १५ „	६५५५४२४	२०३०४२

नोट—इस सन् में सब मिला कर सब आयु की कुल विधवायें २६४२१२६२ थीं। मनुष्यों की औसत आयु अंगरेजों की ४० वर्ष और भारतीयों की २३ वर्ष थी। १००० में से ३३२ बच्चे १ वर्ष की आयु में ही मर जाते थे।

१० हजार में से सन् १६२१ की गणना के अनुसार विध वाएं ० से ५ वर्ष तक की, ७५ से १० वर्ष तक की ४७० १० से १५ वर्ष तक का १६८। नोट—इंग्लेण्ड और वेल्स में २० वर्ष तक की आयु की कोई विधवा नहीं है। वहां २१ से ६५ वर्ष या इससे ऊपर की विधवाओं की औसत (कुल) हजार पीछे ७३ २ और हमारे यहां १७५ है। पुरुष की औसत आयु २४८ और स्त्रियों की २४७ है।

बाल विवाह आदि कुरीतियों से बच्चे कितने अधिक मरते हैं इस पर कुछ ध्यान दीजिये।

सन् १६२१ की मनुष्यगणना के अनुसार जितने बच्चे प्रतिवर्ष मरते हैं उनमें से सैकड़ा ४० के लगभग तो जन्म के प्रथम में सप्ताह में और सैकड़ा ६० प्रथम मास के अन्दर ही मर जाते हैं।

अन्य देशों के मुकाबिले में हमारे यहां के बालकों की मृत्यु संख्या कितनी अधिक है! देखिये —

इङ्गलेण्ड में हरसाल जितने बच्चे पैदा होते हैं उनमें सैकड़ा सात, फ्रान्स में सैकड़ा ८, अमरीका में १० फी सदी इटली में १६ फी सदी, जापान में १६ फी सदी और यहाँ (भारत में) २० फी सदी मर जाते हैं।

मनुष्य भी यहाँ एक हजार की आबादी में ३८ पैदा होते हैं और ३५ काल के गाल में समा जाते हैं।

हमारा तो यही निश्चय है कि इस भीषण ह्रास के कुछ अन्य

कारण होने हुये भी मुख्य कारण यह नाशकारी "बालविवाह" ही है। बाल विवाह की शृङ्खला कर निम्नांकित विद्वान इसके विषय में क्या कहते हैं वह भी जरा अवलोकन करिये।

(१) "पशु जगत में कोई पशु बिना सर्वाङ्ग पुष्ट हुये बच्चा नहीं देता। मनुष्य जगत के अङ्गों की पुष्टी के लिये २५ वर्ष से अधिक समय चाहिये। अतएव इस अवस्था के पूर्व ही गर्भाधान करना पशुओं से भी हीन कार्य करना है। ऐसा करना न केवल निन्दनीय है बल्कि अति हानिकारक भी है। (Indu madhaw mallick M A, B L द० द०)

(२) इतिहासकार 'टालवाईस ह्वीलर' लिखते हैं कि जब तक भारतवासी छोटी २ बालिकाओं का विवाह छोटे २ बालकों से करते रहेंगे, तब तक उनकी सन्तान छोटे बच्चों से अधिक अच्छी दशा में कभी न पहुँच सकेगी। स्वाधीनता और स्वराज्य आन्दोलन में वे निस्तेज और बलहीन सिद्ध होंगे और राजकार्य उन्नति का उपयोग करने के लिये वे किसी भी प्रकार की शिक्षा से समर्थ नहीं हो सकेंगे। इसमें सन्देह नहीं कि शिक्षा के प्रभाव से उनकी बुद्धि में गम्भीरता आ जायगी और वे किसी गम्भीरता या प्रौढ़ मनुष्य के समान बातें करने लगेंगे परन्तु सब कुछ होते हुये भी उनका आचरण असहाय बालकों ही के समान बना रहेगा।" (द० द०)

(३) ××××–"बाल विवाह की कुप्रथा नवीन भारत के लिये अत्यन्त लज्जास्पद है इसका निर्मूल करना भारत सन्तान का सब से प्रथम और महान कर्त्तव्य है।"
(Wake up India by Dr Annie Besant पृ० ३०)

(४) प्रोफेसर कांच-केंब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया जिल्द १ पृष्ठ ८८ से १०६ में अन्य कई बातों के साथ यह भी लिखते हैं कि–"ऋग्वेद में एक से अधिक पत्नियों का उल्लेख नहीं। बाल विवाह का भी कोई वर्णन नहीं। वर और कन्या दोनों अपनी इच्छा से विवाह कर सकते थे।"

(५) यूनानी एलची मैगस्थनीज ने (ancient India) में ऐसा लिखा है कि–"महाराजा चन्द्रगुप्त मौर्य सम्राट् के समय में बालविवाह नहीं होते थे"

अब यहां इस विषय को धार्मिक प्रश्न मान हम संस्कृत साहित्य एवं धार्मिक विषयों के कोई उद्भट विद्वान नहीं। हां जो कुछ पुस्तकावलोकन और विद्वानों के सत्संग से अनुभव हुआ है उस पर से कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे। हम इससे प्रथम यह सूचित कर देना आवश्यक समझते हैं कि वैयक्तिक रूप से हम सनातनधर्मावलम्बी हैं इस धर्म पर उतना ही उत्कट प्रेम है जितना कि एक सच्चे आस्तिक सनातनधर्मी का होना चाहिये। किन्तु इसके साथ ही हमारा यह भी सिद्धान्त है कि "प्रत्येक मनुष्य को अपने स्वतन्त्र हार्दिक विचार प्रगट करने का जन्म सिद्ध अधिकार है।" समाप

है कि निम्नाङ्कित युक्ति विवाह अनुमोदक संस्कृत धार्मिक ग्रन्थों के वचनों के सम्बन्ध में हमारी धारणा और मूलक हो। यदि इनके सिवा कोई संस्कृतज्ञ महानुभाव कोई को कृपा कर बाधित करेंगे तो हम पुस्तकभाव में उनकी शुभ सम्मति का आदर स्वागत करने के हेतु हृदय से उद्यत रहेंगे तथा पुस्तक की द्वितियावृत्ति में—यदि होगी तो—उस का उल्लेख भी सहर्ष कर देंगे। अस्तु—

हमारे एक विद्वान् मित्र ने एक बार कहा था कि हिन्दू धर्म शास्त्र कल्पवृक्ष और कामधेनु के समान हैं जिन में कि अनुकूल तथा प्रतिकूल दोनों ही मन रूपी फल अनायास ही उपलब्ध हो सकते हैं" हम नहीं कह सकते कि यह अतिशयोक्ति है अथवा सत्य है। हाँ विषयान्तर के हेतु क्षमा।

देखिये अष्टांग हृदय के कर्त्ता श्री वाग्भट्ट क्या कहते हैं कि—

(१) श्लोक—"पूर्ण षोडश वर्षा स्त्री पूर्ण विंशेन सङ्गता।
शुद्धे गर्भाशये मार्गे रक्ते शुक्रेऽनिले हृदि॥
वीर्यवन्तम् सुतं सूते ततान्यूनाब्दयोः पुनः॥
रोगाल्पायुरधन्यो वा गर्भो भवति नैव वा॥"

श्लोकार्थ—अर्थात् १६ वर्ष की स्त्री हो व पूर्ण २० वर्ष का पति हो, और शुद्ध गर्भ से शुद्ध वीर्य का सम्बन्ध होने से वीर्यवान् पुत्र का जन्म होगा। इससे कम में संयोग करने से रोगी व अल्पायु व निर्बल पुत्र का जन्म होगा अथवा गर्भ ही न रहेगा।

(२) "नारी वाजि पृष्ठस्थ या देहाभिमान सना।

युवरस्त्वमाजने प्रजां दर्धा दिदिडूढि ॥ यजुर्वेद ३४ १० ॥

अथ—अर्थात् हे कुमारियो ! तुम ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्णतया पालन करके सारा उपयोगी विद्याओंका सीख करअपनी इच्छा-नुसार और अपनी परीक्षा से उत्तम वर्ग का अपना पति चुनो और उनके साथ २ आनन्द पूर्वक गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर उत्तम प्रजा को उत्पन्न करो। (य० भा० दे० द०)

(३) "ब्रह्मचर्येण कन्यायुवान विन्दते पतिम्।

श्राड्वान् ब्रह्मचर्येणाश्वा घास जिगीषति ॥

(अथर्ववेद कांड ११–१८ सूत्र ५)

अर्थात्—जब वह कन्या ब्रह्मचर्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ चुके तब अपनी युवावस्था में पूर्ण युवा पुरुष को अपना पति करे, इसी प्रकार पुरुष भी सुशील धर्मात्मा पत्नी के साथ प्रसन्नता से विवाह करके दोनों परस्पर सुख दुःख में सहायकारी हों। क्योंकि अनड्वान् अर्थात् पशु भी जो पूर्ण जवानी पर्यन्त ब्रह्मचर्य अर्थात् सुनियम में रक्खा जाय तो अत्यन्त बलवान होकर निर्बल आयों को जीत लेता है।

(४) "ऋतुमती त्वनग्निका तां प्रयच्छेत्त नग्निकाम्" ॥

[गृह्य संग्रहे श्लोक १७]

अर्थ-ऋतुमती कन्या अनग्निका है और ऋतुओं के पश्चात् विवाह करें।

(५) "पिता ऋतून् स पुत्र्याश्च गणये दाहित सुधी"।

(संस्कार कौस्तुभे पृष्ठ २१)

अर्थ-बुद्धिमान माता पिता स्व-कन्या के ऋतुओं को गिनें, व विवाह विधि नककन्या को घर में रखे।

(६) "विवाहन चतुर्थ्यां रात्रौ गर्भाधान माह।

दक्षिणेन पाणिना उपस्थमभिमृशेतु ॥गोभिल॥

अर्थ-विवाहान्तर चतुर्थ दिन पर दक्षिण हस्त से कन्याके गुह्य अंग को छू गर्भाधान करे।

(७) "पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान्नारीतु षोडशे" ॥

(धन्वन्तार कृत सुश्रुते)

अर्थ-पुरुष २५ व कन्या १६ वर्ष में विवाह करे।

(८) "षोडशाब्द वय प्राप्ते संज्ञायास्तत् पिता सुखी।

(भविष्य पुराण)

अर्थ-१६वें वर्ष संज्ञा का विवाह उसके पिता ने सुख पूर्वक किया।

(६) "त्रीणि वर्षाण्यु दीक्षेत कुमार्य ऋतुमती सती ॥ मनु० ॥"

अर्थ-कुमारी ऋतुमती होने के ३ वर्ष पश्चात् विवाह करे

इस समय तक पीछे जो अवतरण दिये गये हैं वे "बाल-विवाह" न करने के पक्ष में हैं। इस प्रकार के कई वचन धार्मिक ग्रन्थों में भरे पड़े हैं। इसके सिवाय कई पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथाओं से भी 'बाल विवाह' सिद्ध नहीं होता।

इसके विरुद्ध यमस्मृति, संवर्त स्मृति, संवर्त संहिता, दक्ष स्मृति (कुल्लूभट्ट कृत) आदि में बाल विवाह का समर्थन है किन्तु समयानुसार इन स्मृतियों की रचना हुआ

करता है, और न आज्ञायें भी उस काल में वाध्य होकर मानी जाती हैं उनके पश्चात् उनका उतना महत्व नहीं रहता आज भी इन स्मृतियों के अनुसार कार्य कहाँ किया जाता है। यदि ऐसा न होता तो साम्प्रत समय तक स्मृतियों की संख्या १८ तक न पहुँच जाती।

भारत के प्रसिद्ध वक्ता तथा विज्ञानज्ञानी सन्यासी– जिन्होंने कि अमेरिका तक में वेदान्त की धाक जमाई स्वामी रामतीर्थ जी 'भारत का भविष्य' नामक अपने एक लेख में अपने देश भाइयों को सम्बोधन करके इस प्रकार स्मृतियों के विषय में लिखते हैं।'

"प्रिय देश भाइयो! याद रखिये, ये स्मृतियां और शासन आप के लिये हैं आप उनके लिए नहीं। सर्वत्र नित्य श्रुति का प्रचार कीजिये किंतु स्मृति को समय की आवश्यकता के अनुसार बना लीजिये। स्मृति पर तुम्हारा पैतृक अधिकार (Heritage) हो न कि स्मृति का तुम पर।" आदि आदि॥ अस्तु। (श्री रामतीर्थ ग्रन्थावली वर्ष ३ खंड ३ सदुपदेश भाग १४)

इस छोटी सी नाटक की पुस्तक में इतना लम्बा वक्तव्य प्रिय पाठकों को नीरस तथा अरुचिकर प्रतीत हुआ होगा सम्भव है कि कुछ मित्र इसे मेरी अनधिकार चेष्टा भी समझें। किन्तु यह जिस विषय का नाटक है उसके विषय में कुछ

प्रकाश डालने का लाभ सर्वसाधारण कर सकेंगे यही इस का मुख्य कारण है।

इस वक्तव्य के लिखने में Indian year book 1929, सेन्सस रिपोर्ट, देश दर्शन, पुस्तकें, सामयिक पत्र ट्रेक्ट आदि से सहायता ली गई है इसके लिये हम उनके प्रकाशकों एवं लेखकों के कृतज्ञ हैं।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'श्रीकृष्ण सन्देश' के कलकत्ते के सम्पादक मण्डल को जिसने कि मेरी यह तुच्छ कृति पसन्द कर तथा निश्चय पुरस्कार प्रदान कर मेरा उत्साह बढ़ाया। (२) तत्समय के 'श्रीकृष्ण सन्देश' के वरिष्ठ प्रबन्धक एवं लेखक श्री बाबू जवाहिरलाल जी खत्री जिन्होंने कि प्रस्तुत नाटक की मूल कापी कष्ट उठाकर सम्पादक आफिस से ढूंढकर भेजा तथा समय समय पर मेरे पत्रों का उत्तर देते रहे को। (३) श्रीयुत् दिनकर गङ्गाधर जी गारे बी० ए० उज्जैन जिन्होंने कि मेरी प्रार्थना स्वीकार कर इस नाटक की भूमिका लिखने की कृपा की को। (४) 'मोहन-प्रेस' इटावा के व्यवस्थापक मेरे जातीय बन्धु-श्री चूडामणि जी चतुर्वेदी जिन्होंने कि प्रूफ देखकर सहयोग पूर्वक पुस्तक का छापकर अल्प समय में ही इस रूप में देने का कष्ट उठाया को एवं वे मित्र जो कि मेरी इस कृति का शीघ्र प्रकाशित करने का मुझे उत्साहित करते रहे, इन सब सज्जनों को उनकी कृपाओं के लिये हार्दिक धन्यवाद देता हूँ तथा कृतज्ञ हूँ।

नाटक के पात्रों के विषय में इतना सूचित कर देना उचित समझता हूँ कि पात्रों का नामकरण संस्कार किसी का दिल दुखाने की नियत से किसी को लक्ष्यकर नहीं किया गया है और न वे निज महाराज्य के अतिरिक्त किसी राज्य के निवासी हैं। यदि किसी का नाम पात्रों के नामों में मेल हो कोई हो तो वे निज धारणा कर निरस्त न कर लें।

"चौरे-लक्ष्मी-लता"-का यह प्रथम गुच्छ है। यह मेरी पहिली कृति है और सब से पहिले यह उस जगतपालक जगदाधार परम पिता परमेश्वर को सप्रेम-सादर अर्पण करता हूँ पर उस के इस प्रसाद को प्रेमी पाठक पाठिकाओं को भी ग्रहण करने की प्रार्थना करता हूँ। "ज्यों बालक कह तोतरि बाता, सुनि मन मुदित होहिं पितु माता।" गोस्वामीजी की इस उक्ति के अनुसार अच्छी बुरी जैसी कुछ कृति है-आप के कर कमलों में अर्पित है। यदि प्रेमाश्रय रूपी जल के द्वारा आप सहृदय सज्जनों ने इस लता को धाराय रक्खा तो शीघ्र ही इसमें कमल प्रगा (५ अंक नाटक पृ० सं० करीब १५०) नामक द्वितीय गुच्छ के लगने की सम्भावना है। उस समय आपके दर्शनों की उत्कट उत्कंठा है।

इस पुस्तक का सर्वाधिकार रक्षित है, कोई महाशय छापने आदि का बिना पूछे साहस न करे।

ईश्वर सब भाइयों को ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करे जिस से कि नाशकारी प्रचलित कुरीतियों का समूलोच्छेदन के हेतु

कटिबद्ध हो सफलता प्राप्त करें ऐसी आन्तरिक प्रार्थना है। यदि मेरे इस छोटे से नाटक से किसी का कुछ भी हित हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा। पुनः मिलने की आशा लिये विदा होता हूँ। मंगलमय भगवान् सब का मंगल करें। शुभम् भूयात्।

भवदीय—मातृ भाषा हिन्दी का एक तुच्छ सेवक —

मिती माह सुदी ५ (वसन्तपञ्चमी) चन्द्रवार सं० १९८६ ता० ३-२-३०

लक्ष्मीनारायण क० चतुर्वेदी
(रामपुरा हो० स्टेट निवासी)
हेडमास्टर 'श्री गोदावत स्कूल'
हिन्दी अध्यापक 'श्रीगोदावत जैन गुरुकुल'
लक्ष्मीसदन पोष्ट छोटी सादड़ी (मेवाड़)
(Via Neemuch Cantt B. B & C. I Ry)



इस नाटक के एक्टर्स (पात्र)

पुरुष पात्र (एक्टर्स)

[१] माधवप्रसाद—जोधपुर का एक लक्षाधिपति प्रसिद्ध सेठ मोहन का पिता।

[२] मोहन—माधवप्रसाद का पुत्र।

[३] नारायणचन्द्र—जयपुर का प्रसिद्ध धनी सेठ मोहिनी का पिता।

[४] सुरेशचन्द्र पाठक—सेठ माधव प्रसाद का मित्र।

[५] सुशीलचन्द्र पहलवान „ „

[६] सुन्दरलाल गुप्त „ „ और मुख्तार

[७] मेजर—डाक्टर अति उच्चशिक्षा प्राप्त एक अंगरेज,

[८] छोटा डाक्टर—मेजर के नीचे (मातहत) एक देशी डा०

[९] कल्याण—सेठ नारायणचन्द्र का कोचवान।

[१०] हीरालाल—सेठ नारायणचन्द्र के मुनीम का पुत्र।

स्त्री पात्र (एक्टर्स)

[१] मालती—सेठ माधवप्रसाद की पत्नी।

[२] लक्ष्मी—सेठ नारायणचन्द्र की स्त्री।

[३] मोहिनी—सेठ „ „ पुत्री।

[४] चम्पा—मोहिनी की सहेली।

[५] चमेली— „ „ „

मोहन-मोहिनी ।

॥ श्रीहरिः ॥

मोहन-मोहिनी ।

अंक पहला दृश्य (परदा) पहला

स्थान नाटककी रंगभूमि, समय रात्रि ८ बजे

(मंगल कामनार्थ—नान्दी प्रार्थना)



(राग—तर्ज नाटक—)

तू कर्त्ता ! जगभर्त्ता ! दुखहर्त्ता दातार !
भारत देश दशा लख करिये आकर शीघ्र सुधार ॥टेक॥
(अन्तरा)—नागिन—कुमति, अति दुख दे रही ।
द्रव्य, बुद्धि, शक्ति शौर्य, हरण कर रही ॥
पतन—अन्ध—कूप घोर जाता रहा ।
सद्गुणों का ह्रास कर रसातल जा रहा ॥
करुणागार ! सुयश अपार ! न पावें पार !!
दयादृष्टिकर शीघ्र दुर्दिनों को प्रभु ! शीघ्र सुधार ! तू कर्त्ता०

(सूत्रधार का प्रवेश)—सूत्रधार—अहा ! आज इस सभ्य समाज का अवलोकन कर एवं इस सभा की ओर२ शिक्षाप्रद दृश्य देखने की उत्कट उत्कंठा देख मेरा भी हृदय आनन्द को

तरङ्गों से तरङ्गित हो रहा है। हां तो इन्हें कौनसा दृश्य दिखाना चाहिये। [कुछ सोचकर] हां, ठीक सब से प्रथम प्यारी नटीको बुला उसकी भी तो शुभ सम्मति पूछूं। (नेपथ्य की ओर देखकर) नटी ! आ प्यारी नटी ! जरा यहां आने का भी तो कष्ट उठाओ।

नटी—आई प्राणनाथ ! आई सेवा में उपस्थित हुई (शुभ वेषमें उपस्थित हो हाथ जोड़) इस दासी को क्या आज्ञा है ?

सूत्रधार—प्यारी ! (हाथ से दिखाकर) इन आगन्तुक महाशयोंकी आज कोई उत्तम उपदेश जनक दृश्य देखने की अभिलाषा है तुम्हारी सम्मति में इन्हें कौनसा दृश्य बताना चाहिये ?

नटी—आर्यपुत्र ! प्राणाधार ! मेरी इच्छा है कि आज इन महाशयों का "बाल विवाह कुरीत विषयक मोहन मोहिनी" नाटक का दृश्य बतलाना ही श्रेष्ठ है और यही समुचित भी है क्योंकि सम्प्रत समय में इस दुष्ट कुरीति से देश का अधिक अहित भी हो रहा है।

सूत्रधार—[स्मरण करके] हां, प्राणवल्लभे ! अत्युत्तम-बहुत ठीक, वही करके बतलावें। किन्तु प्रथम इन सज्जनों के मनोरञ्जनार्थ कुछ गायन सुनाओ पश्चात् सिधाओ और उसकी तैयारी करो, मैं भी शीघ्र ही तुम्हारी सेवा में उपस्थित होता हूँ।

नटी—[हाथ जोड़, मस्तक झुका] जो आज्ञा है।

गायन-[तर्ज-म्हें काई जाणूं म्हाइया गाँवू का रंग भाव)
राग उदयपुर-मेवाड़ की गरबा-धामा ठेका।
[वाद्य प्रकार नृत्य सहित]
तू सोच मानव ! खोल आंख ! बुद्धिमें निज तोल ।
(बुद्धि में निज ताल रे ! तू बुद्धिमें निज ताल ।)
सुरीति सुधा पानकर, कुरीति-विष न घोल ॥तू सोच०

अन्तरा-दादा-देश, स्वजाति, समाज का, होरहा हाल महान ।
जटिल समस्या हारही, हो कैसे उत्थान ॥
सुधार को पसार, बजा समुन्नति ढोल ॥ तू सोच०ताल॥१॥

अन्तरा-(दादा) नहीं प्रेम है सघटन, नहिं निज तन बलवान ।
'लक्ष्मी' भी है तज चली, क्या होगा अवसान ॥
तू छोड़-दोष चाल, जगदीशकी जय बोल ॥ तू सोच ताल ।२।
(नृत्य करते हुये धीरे धीरे प्रस्थान)

सूत्रधार-(सबों की ओर देखकर)

॥ गायन ॥

अदूरदर्शी हैं, जो अकुर खोद फेंकते।
बच्चों का व्याह करते, शुभा शुभ न देखते ॥
वे जिन्दगी उठाते फंस, कुरीति पंक में।
देखिय पाठक ! यही इस नाटक के अंक में ॥

(समयानुसार पाठक की जगह दर्शक का प्रयोग भी किया जा सकता है।)

(सूत्रधार का ताली बजाना—यकायक पर्दा बदल आगे का दृश्य दिखाई देना, सूत्रधार का भी गायब होना ।)

(दृश्य पहला पूर्ण)

"मोहन-मोहिनी"

अंक पहला—दृश्य (पर्दा) दूसरा।

स्थान—जोधपुर में सेठ माधवप्रसाद का अपनी स्त्री मालती पुत्र मोहन के सहित अन्त पुर में कोच पर बैठे दिखाई देना।

मालती—(मोहन को गोद में ले प्यार करते हुये) माधव से-प्रियतम ! पुत्र मोहन की अवस्था ७ वर्ष की होगई। अब इसके विवाह का आप शीघ्र व्यवस्था करदें तो अच्छा हो।

माधव-प्यारी ! मोहन तो अभी निरा बच्चा है अभी से उसे विवाह के फन्दे में डालने से हानि के अतिरिक्त लाभ कुछ भी नहीं है।

मालती—लाभ, लाभ आपको क्या चाहिये ? धन है दौलत है, नौकर है चाकर हैं, दुकान है हवेली है, बाग है बगीचा है, घोड़ा है जोड़ा है, मोटर वोटर न जाने क्या क्या

सब कुछ है। फिर भी आप लाग हा लाग फरमाते हं आपका क्या चाहिये ? क्या किस बात की है ?

माधव—अरी मुझे यह सब कुछ मालूम है, इसस उसे का क्या ? मोहन का अभी ब्याह की आवश्यकता नहीं है।

मालती—तो, इस किस बात का आवश्यकता है।

माधव—इसका इस समय विद्यारम्भ कराना, खूब पढ़ाना, लिखाना, सदाचार सिखाना, व्यायाम का शौक दिलाना, ब्रह्मचर्य का महत्व बतलाना, पुष्ट बलिष्ट बनाना और इसका भविष्य जीवन उच्च आदर्श रूप बनाना।

मालती—(हंसकर) अर वाह ! यह भी आपने एक ही कहा ! क्या उसे पढ़ा लिखाकर नौकरी कराना है, कसरत सिखा क्या अखाड़े में लड़वाना है ? ब्रह्मचर्य सिखा क्या साधु बनवाना है ? मेरा प्यारा पुत्र यदि बिना पढ़े हो दोनों हाथों से धन लुटाया करे तो भी सात पीढ़ी तक धन न घटे ! नौकर चाकर जहाँ उसका पसीना गिरे खून गिराने को तैयार रहते हैं। ऐसी स्थिति में आपको उसके शरीर की चिंता भी न करनी चाहिये।

माधव—अरे तुम आज कैसी बातें कर रही हो ! देश की दशा तुम्हें मालूम नहीं। आज हमारा कमजोरी के कारण ही (गुंडों द्वारा) हमारी बहू बेटियां उड़ाई जाती हैं, मा... ...क्रूट होती है। धर्मप्राण देशभक्तों का हत्यायें होती हैं देवताओं का अपमान होता है। फिर संसार में बुद्धि

मान, विद्वान् और बलवान की ही मदद होती है। मूर्ख और अशक्त अपने मनुष्य और धन की ही क्या स्वय खुद की ही रक्षा नहीं कर सकता। लक्ष्मी तो चञ्चला है उसका क्या ठिकाना? आज है कल नहीं! क्या तुम ने धनवानों के मूर्ख बालकों की दुर्दशा होते नहीं देखी है? ऐसी बात क्यों?

मालती—आप को इन बातों से क्या करना है? वे सब उनके दुर्भाग्य की बात है।

माधव—क्यों नहीं करना है? क्या तुम्हारे पुत्र ने सकल सौभाग्य का ठेका ले रखा है? इसका क्या सुबूत है कि उसको कभी दुर्दिन पाला ही न पड़ेगा। लौकिक व्यवहार भी तो देखना चाहिये। सब बातोंको सोचना चाहिये। पानी पहिले पाल बांधना चाहिये। किसी कवि ने कहा भी है कि—

दोहा—जिन न पढ़ाया पुत्र को सो पितु बड़ो अभाग।
माहत बैठा बुध सभा ज्यों हंसन में काग॥

और नीति में भी कहा है कि—जिन माता पिताओं ने अपने पुत्र को विद्वान् नहीं बनाया वे उसके शत्रु हैं"।

मालती—ईश्वर सदैव उसकी रक्षा करेगा। विद्वान् और बलवान सबकी वही रक्षा करता है।

माधव—सुनो, "आप बल खड़ा जो होता, उसकी मदद करते भगवान्। परमुखापेक्षी नहीं होना ऐसा कहते हैं

विद्वान् ॥ १ ॥ ईश्वर भी उसी की सहायता करता है जो अपनी रक्षा करने की स्वयं शक्ति रखता है। अशक्त का वह भी सहायक नहीं है। संसार में उसको ही जीवित रहने का अधिकार है जो बलवान है॥ अशक्तों को तो इस संसार में जीवित रहने तक का अधिकार नहीं है। इससे समय रहते तुम्हें फिर चेताता देता हूँ कि अपने पुत्र को नागर बनाये हुए सब सद्गुणों से विभूषित करने का पूर्ण प्रयत्न करो और अविलम्ब से कम से कम दस बारह वर्ष तक तो उसके विवाह का नाम तक मत लो। नहीं तो एक दिन पूर्ण पश्चात्ताप करना पड़ेगा। हाथ मल के पछताना पड़ेगा पर फिर पछताये होत कहा जब चिड़ियाँ चुग गई खेत' कहावत चरितार्थ होगी। (उठना चाहता—मालती का हाथ पकड़ बैठाता)

मालती–(प्रेम युक्त नम्र कटाक्षकर, गले में हाथ डाल नेत्रों में अश्रु भर पुनः कहना) प्रियतम! मेरा सांसारिक विवाद के लिये एक छोटा सा प्रार्थना थी किन्तु आपने न जाने कहाँ कहाँ की ऊटपटांग बातें ला रखीं। प्यारे! आप को मेरी यह प्रार्थना तो स्वीकार करनी ही पड़ेगी। चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय। कीजिये प्यारे स्वीकार कीजिये। [रुदन करना]

माधव-अच्छा! पहले यह तो बतलाओ कि तुम्हें यह कुबुद्धि कैसे और क्यों उत्पन्न हुई!

मालती-एक तो अपनी जाति और पास पड़ोस के प्रेम विवाह देखकर मेरी भी इच्छा हुई कि उनके समान मेरे प्यारे, आँखों के तारे, मोहन के भी एक छोटा सा कमसुन करता बहू आजाता तो उस सुन्दर जोड़ी को देख आँखें ठंडी करूं। दूसरे (चुप)।

माधव-क्यों! चुप क्यों होगई? कहो, दूसरे क्या?

मालती-इस ढलती उमर में, बड़े जतन, मन्तर तन्तर देवी-देवता, ओझे-स्याने, दवा-दारू ताजिये-मजार, पीर-पैगम्बर मुल्ला-मुर्शिद गराय अगार, और पूजा-पाठ यज्ञ-हवन आदि आदि मन्नत-मन्ना मानता करके एक लाल पाया है। मैंने इसके लिये क्या २ नहीं किया? आपसे अब क्या छिपाऊं! मैंने इसके लिये धर्म छोड़ा कर्म छोड़ा और बड़प्पन का विचार भी छोड़ा, तब बड़ी कठिनाई से इस उम्र में एक पुत्र मिला, यदि विवाह के पहिले मैं मर गई या आप ही को कुछ होगया-(जबान दबाकर)-हाय आपके दुश्मनों को-ना करके भूल के कहती छोटी सी बहू देखने की हौंस मेरे मन की मन ही में रह जायगी। मरने पर मेरी गति भी न होगी। इसीसे पुनः विनय करती हूँ कि जरूर २

स्वीकार करें। १२ वर्ष कितने देखे हैं! एक पल की भी खबर नहीं है।

माधव–मालती कि मैं तुम्हारी बात बिलकुल मंजूर न की तो!

मालती–(गले से हाथ हटा क्रोध से नेत्र तरेर कर) तो तो मुझे अपने पास (पिता के घर) भेज दो और अपने लड़के को लेकर रहो। मेरे भाग्य में कुआ, तालाब, जहर जो कुछ होगा–होकर रहेगा, तुम्हारा भला से! आपको मुबारक बना! आज से तुम न मेरे और न मैं तुम्हारी! [उठना चाहती है]

माधव–(हाथ पकड़ अपनी तरफ खींचकर प्यार से)—अरे कहाँ चलीं? जरा बैठो! सुनो तो! मैंने तुम्हारे और तुम्हारे पुत्र के लिये ही इतनी बातें कहीं उनमें अज्ञानतावश तुम्हें एक भी न रुची। अस्तु। तुम्हारी इच्छानुसार कल ही से इस विषय का प्रयत्न करता हूँ, प्रबन्ध में लगता हूँ। जयपुर में मेरे मित्र एक सज्जन के यहाँ एक बहुत ही सुन्दर कन्या है किन्तु वह इतनी कम उमर में अभी उनका विवाह करने को उद्यत होंगे या नहीं इसकी आशंका है। विवाह न हो तो अभी सगाई (मँगनी) हो सकती है। विवाह कुछ दिन बाद होजायगा मेरा विचार तो २४, २५ वर्ष से कम की आयु में मोहन का विवाह करने का नहीं था पर जिस हालत में तुम जिद, कलह और अशांति पर ही उतारू हो रही हो तब

मुझे भी अनिच्छापूर्वक गजकुमार स्वीकार करना पड़ता है। पर याद रखना-इसका फल बुरा होगा। उससमय पश्चात्ताप करोगे और मेरी बातें याद करोगे। और तुम्हारा और मोहन का भाग्य ?

मालती-(प्रसन्न हो गम्भीरतापूर्वक) अहा हा ! प्यारे ? आज आपने इस दासी की विनती स्वीकार की। आपको धन्य है। [माधव कोई उत्तर न दे उदास बैठता)

(पटाक्षेप)

(अङ्क पहला, दृश्य दूसरा पूर्ण)

"मोहन-मोहिनी"

(अङ्क पहला, दृश्य तीसरा)

स्थान-सेठ माधवचन्द्र का बैठकखाना-बीच में मेज़ उसके आसपास कुर्सियाँ रखी हैं सेठजी मोहन के सहित बैठे हैं, समय-दिन के ५ बजे।

माधव-(स्वतः भावसे स्वगत) हाय ! क्या करूं और क्या न करूं ! उधर स्त्री के हठ का विचार और इधर पुत्र के भावष्य-जीवन सुधार का ध्यान। "भइ गति साँप छछूंदर केरी" हे प्रभु ! बल दो। कर्त्तव्य पर दृढ़ रहने की शक्ति प्रदान करो।

मोहन-(प्यार से) क्यों पिता जी। ब्याह क्या होता है? क्यों करते (करत) हैं। मेरा ब्याह के लिये माता जी कल क्या जाती थीं। यह क्या होआ है? जिनको इन से जोड़। और आप क्या कह रहे थे पढ़ेगा, बुद्धि कन्जलत? [रुकाल, सकाछ]

माधव-(चौंककर), कुछ दु:खित हो, नेत्रों में अश्रु भर—क्या मोहन! क्या पूछा?

मोहन-(देखकर पुछन्डर कर) अजी पिता जी। मेरा बाबू जी। आप तो लाते हैं। नाराज होगये? अब कभी नहीं पूछूंगा बाबूजी। [प्यार से लिपट जाना]

माधव-नहीं लल्ला! मेरे प्यारे मुन्ना। मैं तुझसे नाराज क्यों होने लगा? तेरे प्रश्नों का उत्तर थोड़ी देर में ही मेरे मित्रों द्वारा मिलेगा। पंडित जी आयेंगे। पहलवान आयेंगे। तुम्हारे मामा जी आयेंगे। वे सब अभी आते ही होंगे।

मोहन-मामा जी मेरे लिये क्या लायेंगे? बतलाओ बाबू जी क्या लायेंगे?

माधव-जो कुछ वे लायेंगे सो देख लेगा, तू ले लेना।

मोहन-क्यों बाबू जी! आज भी सब को मिठाई खिलाओगे? क्या गांठ (ठ) है? प्रसन्न होगा।

माधव-क्या तुम भी मिठाई खाओगे बेटा? तुम मिठाई, मिठाई खाना पसन्द करते हो?

मोहन-नहीं पिता जी। मिठाई खाने से ना रोग होता है न?
तुम तो उस दिन कहते थे न? मैं मिठाई नहीं खाऊँगा
माधव-थोड़ा खाने से तो नहीं होता बेटा! बहुत बहुत खाने से होता है।
मोहन-(कूदकर हँसकर) अच्छा अच्छा ' 'थोली थोली
(पंडित सुरेशचन्द्र पाठक, सुशीलसिंह पहलवान, सुमतिलाल गुप्त का प्रवेश)
सब आगन्तुक-(हाथ उठा मस्तक नवा) सेठ साहेब! अभिवादन।
सेठ माधव०-(खड़े हो, करजोड़ प्रसन्न मुख से) आइये। आइये। पधारिये। इधर बैठिये। (कुर्सियों की ओर इशारा करना) [सबका यथा स्थान बैठना]
पंडितजी-कहिये सेठ साहब आपका स्वास्थ्य तो ठीक है। आज स्मरण करने की कैसे कृपा की?
सुशील से०-(हँसकर) अरे भाई कुछ मिठाई विठाई का सामान होने वाला होगा।
सुमतिलाल-अरे भाई तुम्हें भाई किसी कारण से ही क्यों न बुलावें, तुम तो उसके यहां मिठाई खानेका निश्चय करके ही आया करो। [हास्य]
सेठ माधव-आप लोगों से क्या मिठाई दूर है। मंगाऊँ? [नौकर को पुकारना]
मोहन-(हंसकर) मिथाई खाने से तो लोग (रोग) होता है

न बाबूजी ! क्या कुछ [सच] है न-नाम जी ?
(माना जी)

सुमतिलाल-(हंसकर) अवश्य होगा है मोहन।

मोहन-तो ये मिठाई मगान को क्यों कहते हैं मामजी ?

सुमतिलाल-ये तो रोगी होना चाहते हैं मोहन। तुम भी बहुत मत खाया करो, मैं भी नहीं खाता।

मोहन-रोगी होना चाहते हैं, अब आम आम। अच्छा मैं भी नहीं खाऊँगा।

प० सुरेशचन्द्र शा०-अरे भाई, सेठ जी मेरे प्रश्न का तो उत्तर दे ही नहीं पाये और तुम बीच में ही 'दाल भात में मूसरचन्द' होकर कूद पड़े। हाँ, सेठ साहब फरमाइये। आज कौनसी बात ?

सेठ माधव०-सुनिये साहब। आप मेरे अन्तरंग मित्रहैं सुमतिलाल जी मेरे साले होने पर भी एक सच्चे हितैषी दोस्त से कम नहीं हैं। पहलवान साहेब तो मेरे भाई के समान ही हैं। जब कभी कोई जटिल समस्या आ पड़ती है, उस समय आप सज्जनों की शुभ सम्मति आवश्यक हो जाया करती है। ऐसी स्थिति में ही आप लोगों को कष्ट देना पड़ता है। कल से सुमतिलाल जी-बस कहिए मोहन का विवाह अभी कर देने का हठ पकड़ रहा हैं। मैं निज मतिनुसार बस बहुत कुछ समझा चुका पर नहीं मानती, आप सब लोग,

अच्छी तरह सोच समझ कर कोई ऐसा बात का मार्ग ढूढ निकालिये कि जिससे न तो 'सांप मरे और लाठी ही टूटे'।

सुशीलसेन पहलवान-आप तो मोहन को 'गुरुकुल' या 'ऋषिकुल' में प्रवेश करवा दीजिये ताकि आपका उद्देश्य अनायास ही सिद्ध हो जाय।

सुमतिलाल-भाई! तुम मेरी बहिन का स्वभाव नहीं जानते हो, इस कारण ऐसा कहते हो। वह मोहन को अपने पास से कदापि अलग न होने देगी।

सुरेशचन्द्र पाठक-भाई! तब तो मेरी सम्मति यह है कि—'उनके हठ के कारण सगाई (वाग्दान) की रस्म तो कुछ माह पश्चात् ही पूरी करवा दी जावे और विवाह लड़की वाले को समझा बुझा कर जितने वर्ष रुकना सम्भव हो रुकवा दिया जावे, इस कार्य में सुमतिचन्द्र जी भी पूर्ण प्रयत्न कर अपनी बहिन को समझाते बुझाते रहें और विवाह की रोक का लक्ष्य ध्यान में रख उनको शांत करते रहें। सारांश समय समयपर कार्य शीघ्र करनेसे घर अच्छा नहीं मिलता। आदि अनेक कारणों का दिग्दर्शन करा संतुष्ट रखें। इस अवधि में आपन सब मिलकर 'मोहन' को जितना भी योग्य

ओर सके उसका यत्न शीघ्र ही शुरू करदें। आगे ईश्वर मालिक है।

सुमतिलाल—आपकी सम्मति उत्तम है। इसके अतिरिक्त मुझे भी अन्य कोई मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता। मैं भी आपकी सब प्रकार की सम्मति मानने को उद्यत हूँ।

मोहन—बाबूजी! मैंने माना था तो आपने और चिचाजी ने भी कुछ उत्तर नहीं दिया।

माधव—प्रियपुत्र! कल से मेरे मित्र ये पंडितजी तुम्हें विद्या पढ़ाना प्रारम्भ करावेंगे। तुम्हें प्रेम से प्रश्नों के उत्तर भी तो सीखना है न। इस कारण वैसे ही क्या उनसे भी अच्छे २ उपदेश और बातें ये तुम्हें बतलावेंगे खूब ध्यान से सीखना। सीखोगे न।

मोहन—सीखोगे न। (उच्चारण) क्या न सीखूँगा।

सुशीलसिंह—मैं तुम्हें सब प्रकार का व्यायाम सिखाने को तैयार हूँ सीखोगे न मोहन। (हाथ वगैरह से डंड बैठक की नकल करना)

मोहन—व्यायाम क्या? कसरत? (खुश होकर), जरूर सीखूँगा। मैं भी पहलवान बनूँगा पहलवान?

माधव—और सुमन, तुम अपने मामाजी से क्या सीखोगे मोहन?

मोहन—आपसे सीखूँगा रुपये गिनना धन धन या रुपया। (सबों का हास्य)

अच्छी तरह सोच समझ कर कोई ऐसा बीच का मार्ग ढूंढ़ निकालिये कि जिससे न तो साँप मरे और लाठी ही टूटे'।

सुशीलसेन पहलवान–आप तो मोहन को 'गुरुकुल' या 'ऋषिकुल' में प्रवेश करवा दीजिये ताकि आपका उद्देश्य अनायास ही सिद्ध हो जाय।

सुमतिलाल–भाई! तुम मेरी बहिन का स्वभाव नहीं जानते हो, इस कारण ऐसा कहते हो। वह मोहन को अपने पास से कदापि अलग न होने देगी।

सुरेशचन्द्र पाठक–भाई! तब तो मेरी सम्मति यह है कि–'उनके हठ के कारण सगाई (वाग्दान) की रस्म तो कुछ माह पश्चात् ही पूरी करवा दी जावे और विवाह लड़की वाले को समझा बुझा कर जितने वर्ष रुकना सम्भव हो रुकवा दिया जावे, इस कार्य में सुमतिचन्द्र जी भी पूर्ण प्रयत्न कर अपनी बहिन को समझाते बुझाते रहें और विवाह की रोक का लक्ष्य ध्यान में रख उनको शान्त करते रहें। सारांश समय समयपर कार्य शीघ्र करनेमें घर अच्छा नहीं मिलता। आदि अनेक कारणों का दिग्दर्शन करा सन्तुष्ट रखें। इस अवधि में आपस सब मिलकर 'मोहन' को जितनी भी योग्य

धन। सर्के व्यायाम शीघ्र ही शुरू करदें।
आगे ईश्वर मालिक है।

सुमतिलाल—आपकी सम्मति उत्तम है। इसके अतिरिक्त मुझे भी अन्य कोई मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता। मैं भी आपकी सब प्रकार की सम्मति मानने को उद्यत हूँ।

मोहन—बाबूजी! मेरी बातों का तो आपने और पिताजी ने भी कुछ उत्तर नहीं दिया।

माधव—प्रियपुत्र! कल से मेरे मित्र ये पंडित जी तुम्हें विद्या पढ़ाना प्रारम्भ करावेंगे। तुम्हें एक दो प्रश्नों के उत्तर भी तो सीखना है न। इस कारण वैसे ही सही उनसे भी अच्छे २ उपदेश और बातें ये तुम्हें बतलावेंगे खूब ध्यान से सीखना। सीखोगे न।

मोहन—सीखोगे न। (उच्चारण) क्यों न सीखूँगा।

सुमतिलाल—मैं तुम्हें सब प्रकार का व्यायाम सिखाने को तैयार हूँ सीखोगे न मोहन? (हाथ वगैरह से डंड बैठक की नकल करना)

मोहन—व्यायाम क्या? कसरत? (खुश होकर), जरूर सीखूँगा। मैं भी पहलवान बनूँगा पहलवान!

माधव—और मुझसे तथा अपने मामा जी से क्या सीखोगे मोहन?

मोहन—आपसे सीखूँगा रुपये गिनना, धन, धन, धन हँसना। (सबों का हास्य)

माधव—अच्छा वहीं सीखना। ये तुम्हें और भी घर दुकान की वहीं २ बातें समझायेंगे।

मोहन—मैं सबों को एक साथ कैसे ठीक करूँगा बाबूजी ?

सुरेशचन्द्र—बेटा ! तुम्हें सब धीरे २ एक एक बात ही अच्छी तरह समझाकर सिखायेंगे। तुम्हें कुछ भी न अखरेगा। तुम खुद ही शौक से सीखोगे। फिर तुम बहुत बहुत अच्छे बन जाओगे।

मोहन—(प्रसन्न हो कूदता हुआ) तब तो बहुत अच्छा पंडित जी खूब पढ़ूँगा लिखूँगा सीखूँगा।

(माधव का सबों का कुछ जलपान करना-पान सुपारी से सम्मान करना और सबों का धन्यवाद दे नमन कर प्रस्थान)

[पटाक्षेप]

(अङ्क पहला, दृश्य तीसरा, पूर्ण)

'मोहन-मोहिनी'

[अङ्क दूसरा, दृश्य पहला]

स्थान—जयपुर—सेठ नारायणचन्द्र और उनकी पत्नी का [लक्ष्मी] अन्तपुर में बैठ दिखाई देना]

मोहनी—(प्रवेश कर) अम्मा अम्मा ! आली अम्मा ! मेरी गुड़िया की गर्दन टूट गई, उसे लगादे।

लक्ष्मी—हां, देखा बेटा ? मैं उसकी गर्दन जोड़कर उसे जिला दूँगी। तू जा गुड़िया के लिये रसोई बना।

मोहन—अच्छा जाता हूँ। उसके लिये अभी मिठाई बनाता हूँ फिर उसे खिलाता हूँ।

नारायणचन्द्र—क्यों मुन्नी, बिट्टू ! हमें नहीं खिलाओगी ?

मोहिनी—बाबूजी ! यह रसोई तो गुड्डे गुड़ी के लिये बनेगी। उससे आपका पेट थोड़े ही भरेगा। अच्छा जाती हूँ। दूध लाती हूँ। (लक्ष्मी, मोहन, मोहिनी का प्रस्थान)

नारा०—प्रिये आज जोधपुर से मेरे मित्र माधवप्रसाद का पत्र आया है।

लक्ष्मी—क्या उनके घर सब प्रसन्न तो हैं ? कुँअर जी की पढ़ाई आदि का कुछ प्रबन्ध किया है या नहीं।

नारा०—प्रबन्ध वगैरह उन्होंने सब कुछ किया है किन्तु उनकी स्त्री पुत्र का विवाह शीघ्र हो पर ऐसी अभी से जिद् कर रही हैं। इससे अनुमान होता है कि उनके वे शुभ विचार और बड़ी २ आकांक्षायें पूर्ण न हो पायेंगी। उनके समान उनकी धर्मपत्नी भी यदि समझदार होती तो कितना अच्छा होता।

लक्ष्मी—सोना और सुगन्ध होता। प्रियतम ! अपनी मोहिनी को भी पढ़ा लिखा तथा गृहस्थ के कामों में निपुण कर आदर्श के योग्य बना देना चाहिये।

नारा०—मैं पहिले से ही इस विचार में हूँ। अब उसको शीघ्र

ही कार्य रूप में लाऊंगा, पूर्ण प्रयत्न करूंगा। देखो उनका यह पत्र है। ध्यान से सुनो।

* आहिर * मु० जयपुर।
ता० १२-६-२३ ई०

श्रीयुत् माननीय सकल गुणालकृत सेठ साहिब !
नारायणचन्द्र जी मा० जयपुर की पवित्र सेवा में।
परम स्निग्धवर ! सप्रेम सानन्द जुहार-आशीर्वाद॥

मैं यहां पर उस जगत्पालक जगदाधार परम पिता परमेश्वर के कृपा कटाक्ष से आपके अनुग्रह से सकुटुम्ब सानन्द हूँ। आशा है कि आप भी उसी की अनुकम्पा से प्रसन्नता पूर्वक होंगे। आगे समाचार यह है कि "कल से चि० मोहन की माता अपने अबोध पुत्र का अभी विवाह कर देने की मूर्खतावश हठ कर रही है। घर कलश करने तक पर उतारू हो रही है। मेरे विचार तो आप जानते ही हैं। मेरी तो हार्दिक इच्छा यह है कि मोहन का विवाह समय युवावस्था में होवे मैंने उसको समझाने में कोई बात उठा न रखा किन्तु वह अपनी ही बात पर अड़ी हुई है। उसका भाई भी उसको समझाने का पूर्ण प्रयत्न कर रहा है। आपको सूचित करता हूँ कि यदि किसी प्रकार की असुविधा न हो तो जितना शीघ्र हो सके आप सगाई की रस्म अदा करदें और विवाह के लिये जितना विलम्ब करना सम्भव हो करते रहें-मोहिनी को भी योग्य बनाने की चेष्टा करें। विलम्ब की यह बात अधिक दिन

न चलेगी तो भी मुझे विश्वास है कि जितना कुछ विलम्ब होगा, मोहन के हक में हितकर ही होगा।

गत् गुरुवार द्वितीया पुष्य नक्षत्र के दिन से मोहन का विद्यारम्भ संस्कार करा दिया है। व्यायाम आदि का भी समुचित प्रबन्ध किया गया है। आगे ईश्वर मालिक है। सदैव कृपा व प्रेम बनाये रहिये। कुशल पत्र दे बाधित करते रहिये। शेष शुभम्।

भवदीय—प्रीति भाजन—

माधवप्रसाद।

लक्ष्मी-हां! देखिये, पत्र से कैसी परवशता झलकती है? पर, बड़प्पन और लौकिक व्यवहार से भी तो डरना पड़ता है।

मा० च०-इस विषय में तुम्हारी क्या राय है?

लक्ष्मी-जब आपने मोहिनी का सम्बन्ध मोहन के साथ ही करना निश्चित कर लिया है-उनको जो कि आपके मित्र भी हैं-वचन भी दे दिया है तब वे चाहें जब विवाह क्यों न करें। फिलहाल उनकी राय के अनुसार हो सगाई कर देने में भी कोई हानि नहीं है। उनकी बात भी रह जायगी और लड़का भी रुक जायगा।

मा० च०-अरे इस उमर में! मोहिनी तो अभी ६ साल की ही है न?

लक्ष्मी-अभी विवाह थोड़े ही कर रहे हैं। और यह ६ सालकी

और पद्मिनी आदि वीराङ्गनाओं के समान सन्तान उत्पन्न होने का स्वप्न देखना तो मानों आकाश कुसुम (तारे) तोड़ने के समान असम्भव है। क्यों कुछ समझा ?

जहगी–समझा महाराज समझी। (कुछ उदास हो) अतः मुख सन्तान तो भारत-भू-की भार होगा। अब यह आर्यों की रक्षा न कर सकेगी तो अपनी बहू बेटियां और स्वजन परिजनों की क्या खाक रक्षा करेगा। हे ईश्वर ! (निश्वास)

ना० च०–ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हम सबों को सुबुद्धि प्रदान करे। अन्यथा विश्व से इसका शीघ्र नाश हो।

जहगी–तो क्या उनकी राय मानेंगे ? सगाई का रस्म इसी माह में पक्का करेंगे।

ना० च०–हाँ, कल इसके लिये पत्र और मनुष्य भेजूंगा। मजबूरी है।

(पटाक्षेप)

(अंक दूसरा दृश्य पहला पूर्ण)



मोहन-मोहिनी.

अंक दूसरा—दृश्य दूसरा।

[स्थान माधवप्रसाद का सजा बैठकखाना। माधवप्रसाद, मोहन, सुरेशचन्द्र, सुशीलसेन, सुमतिलाल बैठे दिखाई देते हैं] समय दिन के ४ बजे विद्यारम्भ के ५ वर्ष बाद।

माधव—(सुरेशचन्द्र की ओर देखकर) पंडित जी महाराज! मोहन की पढ़ाई व्यायाम उपदेश आदि का क्या हाल है?

पंडितजी—सेठ साहिब! मोहन मेरा शिष्य है। नीति के अनुसार उसी के सम्मुख उसकी प्रशंसा करना अनुचित है। किंतु जब आपने पूछा है तो कहना ही पड़ता है कि "मोहन कई लड़कों में एक ही है। पढ़ने में, लिखने में, विनय में, व्यायाम में, स्वास्थ्य में सब सद्गुणों से युक्त है। 'ब्रह्मचर्य के प्रभाव से शरीर की कान्ति भी मदन' के तुल्य बन गई है। यदि इसी प्रकार मोहन के ऊपर आपका पूर्ण लक्ष्य रहा, तो मोहन प्रतिभाशाली वीर और आदर्श व्यक्ति होगा। ईश्वर इसे चिरायु करें।"

माधव—पंडित जी! इसका श्रेय आप सब सज्जनों को ही है जिनके कारण मोहन की सब बातों में उन्नति हो रही है।

सुशीलसेन—सेठजी साहिब! इसका सच्चा श्रेय तो केवल एक आपको देना चाहिये कि जो पाँच २ वर्ष से घर में इस

यदि आइने ह तो जातिनिंदा के साथ गृहकलह तैयार है।'
दा ग शार स तंग आगहा हूँ। अब ता करने में ही मलनर'
है। जो भाग्य में होगा देखा जायगा।

सुन्दरलाल-जब ऐसा ही है तो कर दीजियगा। झंझट मिटेगा'
ऐसा ही होगा तो मुकलावा (द्विरागमन, गौना) दो चार
साल बाद करेंगे। और मोहनी की शिक्षा-सुधारादि का
कार्य इसी प्रकार शुरू करेंगे।

सुरेशचन्द्र-हाँ, यह विचार उतना उपयुक्त तो नहीं है, जितना
कि होना चाहिये किन्तु इस परिस्थिति में किसी कदर
ठीक है।

माधव-ठीक हो या न हो भाई ? पर मरता क्या न करता।'

(नौकर का प्रवेश)

नौकर—सेठ साहेब ? जयपुर से एक भाई और एक ब्राह्मण
पेन्स दा जन आये हैं।

माधव—अच्छा, यहां पर ही उन्हें लिवा लाओ।

नौकर-बहुत अच्छा ? हुजूर, (नौकर का प्रस्थान)'

माधव-हा जिस बात की अभी चर्चा हो रही थी और जिस
की आशंका थी वही बात सामने आई।

(इतने में दोनों का नौकर के साथ प्रवेश)'

ब्राह्मण-सेठ जी ? आशीर्वाद। मोद—जय राम जी की साब !'
(ब्राह्मण का सेठ जी का पत्र देना),

माधव—(दोनों का आदर से बैठाकर) उनको तथा नारायण

चन्द्र की कुशलमंगल पूछ कुछ बात करने के पश्चात्। (नौकर से) ये दोनों दूर से आये हैं। थके हुये हैं। इनके लिये ठहरने, भोजन आदि का समुचित प्रबन्ध करो।

(नौकर का दोनों के साथ जाना)

(सबों को लक्ष्य कर) लो भाई! जिसकी आशंका थी वही हुआ। लगुन आगई है। वसन्त माघ शुक्ला ५ का ही विवाह निश्चित कर चुके हैं। अब कोई बस की बात नहीं।

सुध—(कुछ उदास हो) सेठ साहेब क्या किया जाय। हमें इस बात का हार्दिक खेद है। अब तो 'होइ है वही जो राम रचि राखा, को करि तर्क बढ़ावहिं शाखा'। पर ही निर्भर होना पड़ता है। आप तो धैर्य धारण कर विवाह कर ही डालिये। ईश्वर सबकुछ अच्छा ही करेगा। अच्छा आज्ञा हो।

माधव—सबको प्रणाम कर—फिर पधारियेगा।

(सबों का प्रस्थान)

(ड्रापसीन)



"मोहन—मोहिनी"

(अङ्क दूसरा, दृश्य तीसरा)

स्थान—जोधपुर=(सेठ माधवप्रसाद के जनाना कमरे में माधव, मालती दोनों का परस्पर बातें करते दिखाई देना)

माधव—प्रिये ! अब तो तुम्हारे मोहन का विवाह होगया। तुम्हारी इच्छा के अनुसार छमछम करती बहू मोहन के लिये मोहिनी आगई ! अब तो तुम्हें सन्तोष, शांति और आनन्द मिला।

मालती—(नेत्र कटाक्ष कर प्रसन्न हो गले में हाथ डाल) 'हम्म-हाँ, स्वामिन् ! आपने एक मेरी हार्दिक इच्छा तो पूरी की अब तो एक दूसरी इच्छा जो ईश्वर पूरी करदे तो सुख स सख। यह दूसरी इच्छा है मोहन के पुत्र का मुंह देखना।'

माधव—[हँसकर] तुम्हारी यह इच्छा भी ईश्वर पूरी करेगा ही। [ताने से] नहीं तो तुम तो स्वयं 'पुत्र प्राप्त कराने के कई साधनों में भी पारंगत हो चुकी हो। ईश्वर की सहायता की सम्भवतः आवश्यकता न पड़ेगी।

मालती—(कुछ झेंपकर) बात बदल-हाँ, कृपा कर विवाह का कुछ दहेज तो सुनाइये ? (पति के मुंह की ओर देख कर

आश्चर्य से) अरे! आप उदास क्यों हैं? शरीर तो ठीक है न?

माधव-शरीर को क्या होता है? इस विवाह में शुरू से ही अमंगलों का सामना करना पड़ा है। मेरा हृदय तभी से धक्धक् कर रहा है। उन अपशकुनों का विचार कर चित्त सदैव सशंकित रहता है। अदृष्ट में और भी न जाने क्या क्या देखना बदा है। (निःश्वास डालना)

मालती-(चकित हो) वे अमङ्गल और अपशकुन कौन कौन से हैं? कृपया कुछ तो सुनाइये।

माधव-सुनो, एक तो जब यहां से बरात रवाना हुई, मार्ग में ही भयंकर कृष्ण सर्प आड़ा फिर रास्ता काट गया, दूसरे जयपुर में घुसते ही सूखी लकड़ियां सामने आई। तीसरे दरवाजे में घुसते ही राम नाम सत्य है' के जाप के सहित एक मनुष्य का शव मिला, चौथे विवाह के अवसर पर मोहन के मस्तक पर मौर' बांधते समय सामने को छींक हुई। और पांचवें स्वर्ण वस्तुयें गुम हुई।

मालती—हां ये बातें अवश्य ही मन को शंकित करने वाली हैं भगवान् रक्षक है। हां; स्वर्ण की चीजें कैसे गुम हुई?

माधव-मोहन के हाथ से एक तो पांच हजार की हीरा जड़ी अंगूठी कहीं गिर गई। दूसरे १० हजार का एक कण्ठा था 'मोहन' से कोई ठग ले गया। इसके अतिरिक्त विवाह

में लगभग १० हजार रुपये खर्च हुये सो अलग। व्यापार में भी कुछ गड़बड़ी नजर आती है।

मालती—मोहन न दोनों चीजें कैसे खोदीं।

माधव—अंगूठी के विषय में तो मैं पहिले ही कह चुका कि बच्चा हो तो है, अंगुली से निकल कर कहीं गिर गई। मराठा कोई मनुष्य मेरे नाम से मांगकर कि तुम्हारे पिता जी मंगवाते हैं, लेगया। मोहन अर्द्ध निद्रित अवस्था में होने के कारण उसे ठीक २ न पहिचान सका। मोहन कहता है कि यह मनुष्य उनका मामा वन मराठा ले गया है मैं निद्रा में था सो उसे अच्छी तरह नहीं पहचान सका। मामा जी तो यहां मालूम होते थे पर वह मनुष्य उनके समान ही अवश्य था। उनकी बोली भी कुछ २ मामा जी से ही मिलती जुलती था।

मालती—(सिर पीट रोकर) हाय! यह तो बहुत बड़ी हानि हुई। उनका नाश हो। मेरे भाई का यह काम हर्गिज नहीं हो सकता। यह तो जयपुर के ही किसी गुण्डे ठग का काम है। जयपुर के ठग प्रसिद्ध होते हैं।

माधव—गुंडे का क्या काम है, यह सब हमारे भाग्य का फेर और दुर्दिन का प्रारम्भ है।

मालती—क्या उसका सरकार ने भी कुछ पता नहीं लगाया।

माधव—सरकार में इत्तला करने से न जाने किस किस की इज्जत बिगड़ती, आफत आती सो अलग ही। इस के

किसी चोर का पता लगाने के लिये भाई होशियारी करता है। इन सब बातों को सोच विचार मनमार दिल मसोस रह गया।

मालती—(धीरे से ठंडी निःश्वास डाल) खैर, विवाह फेरे, गान—मान, आदर—सत्कार आदि का हाल भी तो फरमाइये ?

माधव—आदर—सत्कार यथाशक्ति अच्छा ही हुआ। अपनी जाति के गोलेरवाल मारवाड़ तो प्रसिद्ध ही हैं। कोई विशेषता नहीं थी, हाँ फेरों (भाँवरों) का कुछ दृश्य श्रवण कर सन्ताप करो।

मालती—हाँ हाँ, फरमाइये। मुझे भी सुनने की इच्छा है। (प्रसन्न होना)

माधव—जिस समय पुरोहित जी विवाह की अन्य विधियाँ निपटा रहे थे, उस समय 'मोहन-मोहिनी' की जोड़ी आनन्द से निद्रा देवी की गोद में विश्राम ले, उसके झूले में झूल रही थी। उन्हें क्या मालूम था कि "आज हमारा पारस्परिक चिरजीवन का सम्बन्ध स्थिर हो रहा है। एक दूसरे के सुख—दुःख के चिरसाथी बन रहे हैं। पुरोहित जी दूल्हा, दुलहिन, उनके माता पिता सबों के प्रतिनिधि से आप पढ़ते थे। जो वैदिक मन्त्र, दूल्हा, दुलहिन, उनके माता पिता को पढ़ना—उस अवसर पर कर्तव्या-वश्यक है, उनका कुछ अस्फुट अशुद्ध पाठ वे स्वयं ही कर

और उनसे केवल 'मम' शब्द का उच्चारण करवाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर रहे थे। मानो उनके हर्ता, कर्ता विधाता सब कुछ वे ही हों।

मालती–हां फेरा का हाल कहिये ?

माधव–पुरोहित जी ने जिस समय 'मोहन-मोहिनी' को सबोधन कर कहा कि "उठो 'सप्तपदी' के लिये तैयार हो जाओ" उस समय मोहिनी तो घबराकर गिर पड़ी। दोनों चौंक पड़े। फिर अर्द्ध निद्रित अवस्था में ही मोहन ने पंडित जी से कहा, 'महाराज! 'सप्तपदी'! (सात पाँव वाली की तैयारी कैसी? हमें उससे क्या करना है?) पुरोहित जी ने हँसकर कहा 'अजी कुंअर साहेब! सप्तपदी' का अर्थ सात पाँव वाली की तैयारी कैसी। सप्तपदी का अर्थ 'फेरा है फेरा')

मोहन ने उसी स्थिति में फिर कहा–नहीं महाराज! मैं 'फेरा' की तैयारी नहीं चाहता मुझे फेरा खाने का शौक बिलकुल नहीं है यह प्रश्नोत्तर सुन हँसने लगे। तात्पर्य-यह विधि भी पुरोहित जी ने किसी कदर (प्रकार) पूरी कराई।

मालती–(खूब हँसकर) वाह! यह तो खूब ही बहार रही।

माधव–(उदास हो (प्यारी! यह बहार और हँसने का विषय नहीं है। यह केवल इस पवित्र देश भारत में हमारे अवपता और हास की भूमिका का एक थोड़ा (छोटा)

का भयानक अङ्क (दृश्य) है। "बाल-विवाह" में ऐसा होना स्वाभाविक ही है। हमारे धनी की यह चरम सीमा है! कुछ और दुर्गति का कारुणिक-दृश्य है। देखें आगे क्या क्या देखना शेष है। हा, (निःश्वास) अस्तु अब रात्रि अधिक गई सोना चाहिये।

मालती-जो आज्ञा।

(पटाक्षेप) ड्रापसीन

(अङ्क दूसरा, दृश्य तीसरा पूर्ण)

"मोहन-मोहिनी"

(अंक तीसरा-दृश्य पहला)

स्थान-जयपुर में सेठ नारायणचन्द्र का निजीबाग,
एक परम सुन्दर २० वर्ष की मोहिनी श्रेष्ठ वस्त्र
भूषण परिधान किये अकेली घूम रही है।
समय विवाह के ५ वर्ष के पश्चात्।
सायंकाल ५ बजे के
लगभग।

मोहिनी-(एक भ्रमर अस्फुट अधखिली कलियों पर बैठ उन का रसपान कर पुनः उपर में उड़ते हुये देख उस को लक्ष्य कर) अरे, स्वार्थी! तू कितना नीच है, कि एक कली का रस चख कर तुरन्त ही उसका त्याग कर देता

है। व्याधा कितना अन्धा होरहा है। कार्य सिद्ध हो चुका पर तू उसे फूटी आँख से भी नहीं देखता। प्रेम किसे कहते हैं? यह तो तू जानता ही नहीं। मोह में फँस रहा है, तू क्या जाने? हां, तू भी है तो पुरुष जाति का न? फिर इसमें और तुझमें अन्तर क्यों होने लगा। हां, पुरुष तो प्रायः सब ही ऐसे होते हैं। (यहाँ से आगे बढ़ एक आम्र के वृक्ष पर सुन्दर पुष्पित एक माधवी लता को देख [लिपटी हुई। उसके पास जा उसे छूकर) प्यारी बहिन लतिके! मुझसे तू लाख दर्जे श्रेष्ठ है जो धूप, वर्षा शीत सब समय अपने प्यारे-प्रिय पति के गले में गलबहियां डाल मुदित मन सदैव सेवा में खड़ी रहती है। साथ ही तेरे हृदय धन प्यारे का प्रेम भी परम प्रशंसनीय है जो अपनी प्यारी के पवित्र अङ्क में अहर्निश आबद्ध रहते हैं। बिलग होना तो मानो जानते ही नहीं। अहा! इस स्वर्गीय प्रेम को धन्य है। मेरा विवाह हुये पाँच वर्ष होगये-एक तो हमारा पारस्परिक व्यवहारिक प्रेम सम्बन्ध है और एक इनका! मेरी समझ में हम मनुष्यों से तो इनका जीवन ही सफल है। हे ईश्वर! यदि तू इसी योनि में जन्म देता तो मेरा कैसा अहोभाग्य होता। हे शुभ जोड़ा! तुझे धन्य है। (नेत्रों से अश्रुपात होना) [इतने में सु-मधुर कण्ठ से गाया का आगे लिखा हुआ अंश सुनाई देगा।]

तर्ज कव्वाली—बोलो चाहे न बोलो, दिल आपने लिया है॥टेक॥
अन्तरा—मैं तेरी गली में आया तेरे इश्क ने सताया।
बदनाम होचुका हूँ ॥ बोलो चाहे न बोलो ॥१॥

मोहिनी—अहा ! कितना मधुर आवाज है। लय में कितनी लचक है। गाने में कितनी गम्भीरता और हमदर्दी अनुरागियों के चित्त को भड़का देने की ताकत है। शब्द आने के ढंग से तो कोई इधर ही आता दिखाई देता है। (गाना पुनः सुनाई देना।)

तेरे इश्क में जो प्यारी, बरछी रमाई खाली।
जामी तो हो चुका हूँ बोलो चाहे न बोलो ॥२॥

मोहिनी—(स्वगत) अहा ! इस शृंगारिक गाने का कितना अच्छा भाव है। (पुनः कुछ पास सुनाई देना)

तेरे गले का हरवा, गूंथा हजार फूलों।
गलहार बन चुका हूँ बोलो चाहे न बोलो ॥३॥

(मोहिनी) खुद-शाबाश—अपनी प्यारीके अच्छे गलहार बने।
(मोहिनी का और कुछ आगे बढ़ना गाना बहुत पास, सुनाई देना)

तेरे इश्क की कटारी, मेरे दिल कलेजे मारी।
जख्मी तो हो चुका हूँ बोलो चाहे न बोलो ॥४॥

(मोहिनी का आगे बढ़ना और सामने हो अपने ही नाच-गान करीब का अलबेला चाल से आते दिखाई देना)

मोहिनी—(स्वगत) देखो ! ये निहायत अलौकिक मनुष्य भी कितने

सुना है। जितना पाया, उसी से सन्तोष मान आनन्द उड़ाया। सुन्दर भी है पुष्ट भी है, सन्तुष्ट भी है और बलिष्ठ भी है। (करीम का पास देख प्रकट) क्या करीम मियां, क्या हाल है? कौनसा मरसिया गा रहे थे? और कहाँ से आ रहे थे?

करीम-(मानो मोहिनीको देखा ही नहीं ऐसा भाव बता और इधर उधर देख) अरे, कौन मोहिनीबाई, आहा, आप हैं। जी साहिबा आप हैं। मैंने तो आपको देखा ही नहीं! खैर, वाह जी! आपने तो ठीक ही समझा, 'मरसिया' रन के गाने को ही कहते हैं। इस गाने में भी हजरते आशिक साहिब, अपनी माशूका के रंज में रो रहे हैं।

मोहिनी-हाँ, यह तो कहो कि कहाँ से आ रहे हो?

करीम-मैं तो हुजूर की हवेली ही से आ रहा हूँ। घोड़े की जोड़ी जोत हवेली गया था, सोचा था कि अगर ... हुक्म हो तो कुछ सैर करा लाऊं क्योंकि घोड़ों को भी बँधे २ बहुत दिन हो गये हैं, लेकिन वहां मालूम हुआ कि आप बाग में तशरीफ ले गई हैं। मैं भी हुजूर से पूछने की नियत से यहां चला आया।

मोहिनी-अच्छा किया। मगर मियां करीम! आज तो तबियत कुछ ठीक नहीं है। इसी से आज कहीं भी घूमने जाने का दिल नहीं है। तुम जाओ। घोड़ा को खोल ...

करीम-(कुछ चिल्लाते हो) हुजूर! का दुश्मन की तबियत नाशाद हो। (इतना कह जाने के बजाय मोहिनी को और देखता)

मोहिनी-क्यों? क्या जाना नहीं चाहते? अगर नहीं जाना चाहते तो वह गाना एक बार फिर उसी तर्ज में गाकर सुनाओ।

करीम-हुजूर। वह बार २ नहीं गाया जाता। जब किसी की जुदाई में दिल बेकरार हो जाता है तब दुखी दिल की पुरजोश आवाज़ आप ही आप निकल पड़ती है।

मोहिनी-(हँसकर) तो क्या तुम भी किसी की जुदाई में मर रहे हो?

करीम-(हँसकर) हुजूर! इसका जवाब तो मेरा घायल दिल ही दे सकता है। जबाँ नहीं दे सकती।

मोहिनी-किसने घायल किया है?

करीम-माफ कीजिये। उसका नाम जरा भी जबाँ निकालूं तो कई आफतें उठाऊं, अगर कहीं जान पाय तो मुंह कहां छिपाऊं? और खड़े होने को भी कहीं जगह तक न पाऊं।

मोहिनी-तुम एक बार जरूर बयान करो।

करीम-फर्ज करो कि (हँसकर) वह अगर खुद आप ही हो तो नाराज तो न होंगी?

मोहिनी-(हँसकर) भाई करीम!! तुम हमारे पुश्तैनी नौकर

आगे से चोटी मारे धक्का देना उसका गिरना पत्थर की चोट लगने से सर फटना खून का बहना बेहोश होना] मोहिनी को पुकारना और जाइ है।

करीम-[उसी दशा में बड़बड़ाना] प्यारी मुझे यह भी मंजूर है। चाहे मार डाल पर अपने नाजुक हाथ तो मेरे सीने पर रख उन्हें न हटा।

मोहिनी-हे भगवान्, यह क्या हुआ, [दया से द्रवित हो, उसे उठाने को झुकना, इतने में-मठ के मुनीम के लड़के हीरालाल का आना-]

हीरालाल-[आश्चर्य से] क्या है? मोहिनी बाई क्या? क्या अभी आपने ही किसी को पुकारा था। यह कौन पड़ा है? यह खून कैसा?

मोहिनी-हाँ, करीम कहीं से घूमता घामता इधर आ रहा था, वहां ठोकर खाकर गिर पड़ा माथे में चोट भी आई है।

हीरालाल-[धीरे से] नाम के साथ-पत्थर की चोट लगी या और किसी की? [करीम के पास जा] उसे हिला कर, करीम ओ करीम!

करीम-[करीम का होश में आ हीरालाल को देख चौंकता सा हो] कौन कुंवर जी हैं?

हीरालाल-अरे यहाँ क्यों पड़ा है? यहाँ कैसे आया? गाड़ी पर कोई है नहीं। वह खाली यहीं छूटी पड़ी है।

चाहे अलग गड्ढ रहे हैं। अभी २ एक लड्ड का चाह भी आइ है। आप यहाँ नब्बाब बन गडे हैं। पागल कहीं का।

वराम-[आश्चर्य म घबड़ाकर] हैं सरकार। मैं यहाँ पर बाई साहिबा का मैर करने जा न जा यी पूछा आया था यहा चाह खाकर गिर पड़ा, यह भला हुह-[सलाम कर माहिरा का एक बार सतृष्ण दृष्टिसे देख प्रस्थान]

मोहिनी-[हारालाल की ओर देख] कुँवर साहेब, मर पुकारने म आपका कष्ट पहुचा, इसकी क्षमा चाहती हूँ।

हीरालाल-कष्ट नहीं कष्ट किस बात का ?, और क्षमायाचना की क्या आवश्यकता ? मैं ना आपके पीछे तन, मन-धन म सदैव कष्ट सहन का तैयार हूँ। किन्तु आप कष्ट दन का उद्यत हों तब न ? हमारा ऐसा भाग्य कहाँ ? आप ता-अपन ही एक मुसलमान कोचवान गुलाम का कष्ट देना पसन्द करती है उसका कोइ क्या करे। अपना २ भाग्य, इस कोचवान का धन्य है जो आपके प्रेम का पात्र बना ?

मोहिनी—आज आप य कैसी बातें कर रहे हैं ? बस बेचारे कोचवान की और मुझ का व्यर्थ ही लाँछन लगा रहे हैं। कोइ सुनगा ता क्या कहगा ? आप सभ्य हैं, आपके मुह म ऐसी बात शोभा नहीं देती। मैंने उसके साथ जो कुछ किया-एक मालिक का अपने नौकर के साथ इस प्रकार

की स्थिति में जो कुछ करना चाहिये, वही किया, तब पर भी यह लाड़ली है भगवान्।

हीरालाल—लाड़ली! आश्चर्य! अच्छा कर्त्तव्य किया। (नाटे न) एक भारी हीरा (तुच्छ) गुलाम से कहवाजों के गायन सुनाकी आरज़ू मिन्नत (प्रार्थना खुशामद) करना हम से वह बातें करना। कुछ कुछ कर छाती में लगाने का यत्न करना, यदि मालिक हो तो आप ही सा दयालु हो। (हास्य)

मोहिनी—हमने क्या है! औरों को कुछ कहना हो तो कह डालिये बाकी मत रखिये। मालूम होता है आज तो आपने मुझे 'बाड़ा' बदनाम करने का बीड़ा ही उठाया है।

ही०—'बदनाम'! अरे यह क्या कहती हो? मैं बदनाम करूँगा और आपको। पर क्या आँखों से देखा और कानों से सुना भी कभी झूठ हो सकता है? यदि ऐसा ही होता। हो तो मैं अवश्य झूठा हूँ। मन ही मन समझ के सो देख। और मुझे इन बातों से क्या करना है।

मोहिनी—(कुछ लज्जित सी हो सोचकर स्वगत) इस दुष्ट से भी अब किस प्रकार छुटकारा हो। एक विपत्ति जाकर तो अभी कुछ दूर न हुई और यह दूसरी आई। कुएँ से निकल अब खाई में पड़ने की तैयारी हो रही है। मेरा यह रूप और यौवन खुद मेरा ही शत्रु हो रहा है। घर के चिराग से घर को ही आग लग रहा है। हे ईश्वर रक्षा कर।

[प्रगट] अच्छा मान लीजिये कि मैं हो सब प्रकार से दोषी हूँ अब आपकी क्या इच्छा है ? साफ २ फरमाइये ।

हो०—क्या फरमाऊं ! मैं आपके इस 'प्रेम-नाटक' में 'दाल भात में मूसरचन्द हो आधमका और रँग में भङ्ग' किया- इस अपराध की क्षमा । और जाने की आज्ञा ? अच्छा ! [जाना चाहता]

मोहिनी-[आगे बढ़ हाथ पकड़कर मुस्कराकर] अजी, जरा ठहरिये ? सुनिये तो सही ! आप तो रुष्ट होगये।

हो०-[कुछ आवेश] रुष्ट ! रुष्ट क्यों न होऊं ? अपने प्रेम के प्रतिद्वन्द्वी को अपने सामने ही उस स्थिति में देख भी रुष्ट क्यों न होऊं, आप जानती हुई भी अनजान क्यों बन रही हैं आपसे मेरे मन की कौनसी बात छिपी नहीं है ? मैं आपके लिये सारे भर से मरा जा रहा हूँ । दुखिया द्वारा प्रगट हुई मेरी प्रणयिनी की प्रार्थनायें आपने अवहेलना की प्रेम पत्रिकायें निज पैरों तले कुचल मेरा अपमान किया । भेंट में सनीर नजर के भेजा हुई, मेरी वस्तुओं का, आपने तिरस्कार किया । और एक सुन्दर स्वस्थ, दृढ़ प्रतिज्ञा व योग्य प्रेमी युवक का त्याग, एक भीरु गुलाम युवक को मान दे दिल दिया । [ऐर आपना २ भाग्य ।

मोहिनी—प्यारे ! आपका खयाल गलत है । आपकी आशंका निर्मूल है । हाँ, अजयसिंह पहिले एक बार ही उसकी

जो कि गुलाम हो है-सरल भाव से हीं उपहास कर छेड़ा, उसी से उसका साहस बढ़ा और मेरा इस छोटी सी भूलने ही वह काँड खड़ा कर दिया जो देख चुके हैं मुझे देख मेरी अन्य बहिनों को इस बात की शिक्षा लेनी चाहिये। मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि मैं पूर्णतया निर्दोष हूँ। और यदि आप भी न्याय पूर्वक ईश्वर से डर, कहना चाहेंगे तो यही कहेंगे जो कि इस समय मैं कह रही हूँ। अस्तु-"बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय।" मेरा पिछला अपराध क्षमा कर अब मैं आपकी सेवा में हर तरह से तैयार हूँ। क्योंकि व्यवहार के डर से आपके विषय की पिछली घटनाएँ घटी थीं।

हीरालाल-(उत्कंठित हो) तो प्यारी, शीघ्र मेरी इच्छा पूर्ण करो। कितने ही दिनों के प्यासे, इस चातक को तुम अपने प्रेमरूपी स्वाँति जल का दान दो। (आलिंगन के लिये बढ़ना, मोहिनी का पीछे हटना)

मोहिनी-हैं, हैं, आप अवसर कुअवसर का भी ध्यान छोड़ दे हैं, इस समय यदि कोई अकस्मात् आ निकले तो आप की और मेरी इज्जत का क्या हाल हो? जब प्रेम हो गया है तो बहुत अवसर है।

हीरालाल-हाँ प्यारी, यह है तो ठीक। एक बात और कह चाहता हूँ वह यह है कि "आपके ससुराल का

नो आप जानता ही हैं। आप के पति कौन हैं यह भी किसी से छिपा नहीं है। ऐसी स्थिति में यदि आप दानों ही खूब द्रव्य ले दूर देशमें चले चलें तो इस जिन्दगी और यौवन की कैसी बहार हो ? इस विषय में आपकी क्या राय है ?

मोहिनी-प्यारे! मैं भी यही बात पहिले ही से सोच रही थी। मैं प्रथम ही कह चुकी हूँ कि 'आप की सेवा के लिये हर तरह तैयार हूँ, अवसर मिलते ही निकल चलूंगा। बस, नर्क से तो उद्धार होगा। किंतु यह भी साथ ही प्रार्थना है कि आज की उस उपहासकी घटनाको गुप्त रखियेगा।'

हीरालाल—प्यारी, विचार अत्युत्तम है। पर साथ ही तुम्हें यह चेतावनी भी दिये देता हूँ कि 'अगर तुमने दगाबाजी की यो प्रेम निवाहमें आनाकानीकी या अभाव बताया तो मैं तुम्हारा सब भंडाफोड़ कर दूंगा। मुझे आजकी घटना के अतिरिक्त तुम्हारी कई गुप्तबातें विदित हैं, ध्यान रखना।

मोहिनी—(स्वगत कुछ सोचकर मेरी और गुप्त बातें! झूठा कहीं का बस्त्र, को चकमा देना भी खूब आता है चखना प्रेम रस) [प्रकट] नहीं प्यारे, ऐसा कदापि न होगा। आप पूर्ण विश्वास रखें।

हीरा०-(स्वगत-"भय बिनु होहि न प्रीति" ठीक आइ राहपर) [प्रकट] तो विश्वास के लिये मुझे प्रेम चिन्ह स्वरूप निज मालती/अंगुली की अंगूठी और एक चुम्बन प्रदान करिये

और मेरी अंगूठी आप धारण करिये। इस समय मैं और कुछ नहीं चाहता। (मोहिनी का उत्तर के पहिले आगे बढ़ उससे अंगूठी ले अपनी अंगुली में पहिन अपनी अंगूठी उसकी कोमल अंगुली में पहिनाना और चुम्बन की तैयारी करना इतने ही में कहीं पास ही से मधुर कण्ठ से निकले इस पद्यांश और पायजेब का शब्द सुनाई देना—

पद्यांश—"पथिक, सावधान! सावधान! न पाँव मग धरो।
आपत्तिपूर्ण मार्ग है, कुछ सोच मन करो॥"

हीरालाल—(घबराकर आश्चर्य से) [स्वगत—क्या किसी ने मुझे ही चेतावनी दी? क्या हमारा आपस-भेद कोई जान गया।) प्रकट—प्यारी! स्मरण रखना जाता हूँ। (शीघ्रता से प्रस्थान)

(ड्राप्सीन) पटाक्षेप

"मोहन-मोहिनी"

(अङ्क तीसरा, दृश्य दूसरा)

(स्थान जोधपुर— सेठ माधवप्रसाद का कमरा मोहन दास शय्या पर पड़ा है पास ही माधव मालती बैठे हैं)

समय निदाघ ऋ० ५ वर्ष बाद, दिन १० बजे।

माधवी–(शरीर पर हाथ फेरकर प्यार से) बेटा! कैसी तबियत है?

मोहन–(मन्द स्वर से) पूज्य माता जी!! मेरे सारे शरीर में दर्द हो रहा है नाड़ी जल्दी २ चल रही है, श्वांस जल्दी २ चल रहा है जिससे कि बोलने में अत्यन्त कष्ट होता है। मुँह में कफ के साथ ही बार २ खून भी आता है हा! क्या करूं और क्या न करूं कुछ समझ में नहीं आता।

माधव०–लाल! रोग है बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा, लाला रामदास वैद्यराज का इलाज बन्द करा, आज बड़े डाक्टर सा० का इलाज शुरू करायेंगे। सर्जन साहब को बुलाने भेजा है, वे बड़े नामी, दयालु, परोपकारी और सज्जन हैं। उनके हाथों हजारों असाध्य रोगी अच्छे हुये हैं। वे अभी आते ही होंगे।

मोहन–पूज्य पिता जी और माता जी! अब मुझे जीवन की कुछ भी आशा नहीं है। डाक्टरों को बुलाने की कुछ भी आवश्यकता नहीं। यह केवल विडम्बना मात्र है। आप लोग मुझे क्षमा करना। मैं आप लोगों की अधिक दिनों तक और सेवा नहीं कर सका, यह मेरा अभाग्य है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह जन्म जन्मान्तर आपको समान ही माता पिता प्रदान करे। पिता जी

करवट बदलवाइए। आहा, बड़ा दर्द है!

माधव-(आँखों में आँसू भर) बदलवाता हूँ बेटा! (हाथ के सहारे दूसरी ओर लिटाना)

मोहन-(बेसुधि की दशा में) पिता जी पिता जी! अरे, उस ने मेरा अगूठा निकाला। मामा कहाँ भागते हैं। अरे, मसखरो, मैं फेरा-फेरी छुड़े न छोड़ूँगा। अरे मेरी पुस्तकें, मोहिनी अरे आ डाइन! क्या छेड़ती है? अरे! नहीं नहीं! हाय राम! मेरा प्यारा! क्या कहा? मुझसे तुझे सुख नहीं, मैं छोटा हूँ-दुबला हूँ-अशक्त भी हूँ। हाँ ,परन्तु ना समझ "हाय राम!, दर्द है, (नौकर का प्रवेश)

नौकर-सेठ साहब! दीवान डाक्टर साहेब बाहर से बाहिर पधारे हैं। कहा कि "सेठ साहेब को हमारा सलाम दो। हमारे आने को बोलो।

माधव०-अरे, कहाँ है? चल मैं चलता हूँ। (बाहिर जाकर हाथ जोड़) मदराकर जै गोपाल जी की साथ, पधारिये, आपके बेटे की डाक्टर उस देखने की कृपा करिये।

अँग्रेज़मजन-वेल, सेठसाहेब, हमारा बेटा यहाँ कैसे आया? [आश्चर्य से] हम जब बाहर निकला बहुत बहुत ठीक था। [सेठजी का कुछ समझकर कर लेकिन हो छोटे दर्जी डाक्टर को कहें मिजाजके का

सहसा डाक्टर इङ्गलिश में सम्भाषण]

सरदार—गुड मोर्निङ्ग, अच्छा सेठ साहेब इस मरीज को देखना माँगता है। चलो।

सेठ माधव—पधारिये, इधर पधारिये। [डाक्टर के पास जाना]

सरदार—डाक्टर का नाड़ी देखना, फिर हाथ छोड़ आँख जीभ देखने के पश्चात् 'स्टेथास्कोप' [स्वर्गी नली विशेष] से छाती की जाँच करना अच्छी तरह जाँच करने के पश्चात् उठकर कुर्सी पर बैठना] (छोटे डाक्टर से) मिस्टर, व्हेरी डेंजरस, यू० सी०

छोटे डा०—[कुछ जाँच कर] यस सर।

सरदार—[सेठ से] सेठ जी, इसको दो साल से 'टाइफीन टाइफाइड' है [क्षय रोग विशेष] इसी में इसको निमोनिया हो गया है। अब तुम क्या चाहता है?

सेठ माधव—[सरदार साहेब के पैर पर सौ का नोट दे] हुजूर, मेरा बच्चा किसी तरह बचे ऐसी कृपा हो। मैं इस के लिये एक हजार रुपये देने को तैयार हूँ।

सरदार—आ सेठ साहेब, तुमने इसको बहुत देर से याद किया है। अब रोग बढ़ गया अच्छा होना ना मुमकिन है।

सेठ माधव—रहम करना हुजूर।

सरदार—अरे! हम तुमको दो साल पेश्तर बोला कि साहेब बहादुर कमजोर है। उसका थोड़ा इलाज करता वगैर में पर होगा बहादुर बुरा हुआ है। यह रोग इसी से हुआ

है। इसकी मेमसाहेब औरट का इनर पास हाता और भी बुरा है। उनका हड्डाडेना मुनासिब है। हुआ उस वक्त (वक्त) हमारी बात नहीं माना, उसका ही ये सब नटाजा है। इस वक्त इसका औरट कहाँ है?

सेठ माधव–हुजूर, पीअर है।

सर्जन–(छोटे डाक्टर से) हाट इज दि पीअर ? डाक्टर साहिब !

डाक्टर–मर, उसके बाप के घर।

सर्जन–यस, सेठजी, कितने रोज से ?

सेठ माधव०–हुजूर, तीन माहसे।

सर्जन–डो साला पैरट हमारे कहने से उसे क्या नहीं हटाया!

माधव प्र०–हुजूर ! इधर इसको नहीं हटाना नहीं चाहता था और उधर उसकी मा रखना नहीं चाहती थी।

सर्जन–(आश्चर्य स अस्फुट स्वर से) ओ, डमफूल आर डो इण्डियन मदरस (नोट दमबर) ओ सठ जी। हन्ड्रेड रुपास। सौ रुपया हम नहीं चाहता। सिर्फ ग्रीन फिफटीन फीज आप जा–सिर्फ सोलह रुपये हम ला। पाच रुपये, हमारा छोटा साहब का ला।

सेठ माधव–हुजूर। मैंने य खुशी स दिये हैं मजूर फरमावे।

सर्जन–हम रिश्वत नहीं चाहता, फीस चाहता है। (ग्रुडीबाई, डूर) अच्छा हम गो देर हारहा है। (उठना)

माधव प्र०–[१६ रु० सर्जनको और ५ रु० छोटे डाक्टरको दे]

नम्रता से-हुजूर, बच्चे का इलाज।

सर्जन—(खड़े खड़े) किसी रड (वैद्य) हकीम का बोलो। हमारा छोटा साहब का बाला, हम इलाज करना नहीं मांगता।

माधव०-हुजूर, सबका इलाज करा चुके। हजारों रुपया गमा चुके। अब तो आप ही का भरोसा है। (रुदन करना हाथ जोड़ना)

सर्जन-(चलते हुये ही) सेठजी हम झूठ बोलना नहीं चाहता धोखा (धोखा) देना नहीं मांगता। अब हमारे हाथ को बात नहीं इधर कारगर हो सकता नहीं। मजबूरी है। सेठ जी, अच्छा गुडिविनिंग। (टोप लगा मोटर के पास पहुँचना)

माधव०-(हाथ जोड़ पुन: शाजीजी से) सेठ साहेब का नयनों में आसू भरे कहना हुजूर। अब आपकी राय में यह कब तक जिन्दा रह सकता है? कुछ समय के लिये होश भी आयेगा या नहीं?

सर्जन-(मोटर में बैठ) सिर्फ आधा घंटा जिंदा रह सकता है। दो चार मिनट को होश आ भी सकता है और नहीं भी। अच्छा गुडविनिंग!

(ड्राइवर का इशारा करना, मोटर का प्रस्थान)

[पटाक्षेप]

(अङ्क तीसरा, दृश्य दूसरा, पूर्ण)

इसके रक्षा का उपाय ? (कुछ सोच समझ को) पुर्तगाली सातवीं जेब में हाथ डाला) हैं हैं अवश्य है। (एक छोटा सा शीशी निकाल उसे प्यार से चुम्बन दे) मेरी सदा प्यारी चिरसंगिनी-चिरशांतिदायिनी यह्य है। [शीशी को जेब में रखना। फिर निकालना-क्या इसका यह इलाज इसके प्रभावमूलक पूर्णरूप से पान करूं ? (कुछ सोच) नहीं नहीं अभी समय नहीं है पहिले सावधान करने वाले का पता लगाना चाहिये। [फिर जेब में रखना) बाग में घूमना, ढूंढना, न मिलने पर क्या करूं—चलूं उस निर्मल हौजके किनारे बैठ चित्त को कुछ शान्त करूं। हौज के किनारे जा कुछ दूर बैठ, पेंसिलसे एक कागज पर कुछ लिख लपेट जेब में रखना) अब क्या करना चाहिये ? यदि मैं उस सावधान करने वाले का पता न लगा सका तो मेरी आशा का शान्ति गति , (मन में खूब आनन्द और साहस का अनुभव कर) अरे , उस का आह्वान करूं।

हे सावधान करने वाले। [लावनी]

"तुम आओ प्यारे, शंका शीघ्र हटाओ।
दो शान्ति दान दुख मेरा आप घटाओ॥
(लताकुंज की ओटसे—नाटक खेल में नेपथ्य से)
प्यारी तुम चित में नेक नहीं घबराओ।
हम आवें। तुम सुख चन्द्रकान्ति दिखराओगी॥सं॥

[हास्य और नूपुर पदध्वनि]

मोहिनी–(शब्द के कान पर आघात से जाना चाहती है कि सामने से दो सुन्दर आभूषण युक्त ठहाका मारकर हँसते हुये दो युवतियों का आना)

दोनों युवतियाँ–(हँसकर) लो प्यारी मोहिनी । तुम ने एक का आह्वान किया और हम दो आ गये । रुष्ट तो न होओगी [मोहिनी का यथायुक्त प्रणाम और हाथ जोड़ का स्वागत करना]

मोहिनी–[दोनों को बाहुपाश में दौड़कर गले मिलाना आँखों से आँसू की धारा बहना] अरे, तुम दोनों कब आई ? मेरी चम्पा चमेली उजेला ?

चम्पा–तुमने स्मरण किया और भागी आई ।

चमेली–[हँसकर] पर बड़े ही दुःख की बात है कि एक प्यारा न आया और दो प्यारियाँ आई ।

मोहिनी–[हँसकर] और गाल पर चाँटा मारने का इशारा कर तुम अब भी नटखट ही बनी हो, मुझे अब मत तंग करो नहीं तो सच कहूँ ।

चम्पा–[हँसकर] और [लिपटकर) प्यारी सखी मोहिनी, बहुत वर्षों में मिलना हुआ ? कहो प्रसन्न तो हो ?

चमेली—अच्छा, बताओ कितने वर्षों में मिलना हुआ ? और आनन्द में तो हो ?

मोहिनी—मिलना तो पाँच वर्ष में हुआ ? और प्रसन्न और

आनन्द के विषय में मुझे क्या ज्ञात ? बहिन अच्छा तुम दोनों आज ससुराल में कब आई अपनी कुशल कहो ? दोनों प्रसन्न तो हो न ?

चम्पा—बहिन इतने वर्षों तक यहां क्या रहीं क्या तुम्हारे पिता जी ने तुम्हें आज तक नहीं बुलवाया ? इसका क्या कारण है।

मोहिनी—एक तो विवाह के बाद से ही कुछ लड़की भी रहना है। दूसरे सास ससुर भी अपने पास रखना पसन्द करते हैं तीसरे पति पास रहते ही रहते हैं अब भी बीमार हो हैं इससे यहां रहना ही पड़ता है।

चमेली—तो ऐसी दशा में तुम्हारे पिता जी तुम्हें लिवा कैसे लाए और ससुराल वालों ने ही कैसे भेज दिया ?

मोहिनी—सुनती हूँ कि डाक्टरों के कहने से ही उन्होंने मुझे यहाँ भेज दिया है। कहते हैं कि मेरे रहने से वे बीमार बने रहते हैं।

चम्पा-(हँसकर) ये निगोड़े डाक्टर भी कैसे २ होते हैं। भला देखो तो सही कहीं पुरुषों के पास स्त्री के रहने से भी पुरुष बीमार हो सकता है।

मोहिनी-(हँसकर बात टालकर) अरे ! तुमने यहाँ भर की बात तो शुरू कर दी और यह अब तक न बताया कि स्वास्थ्य कैसा है ? कब आई ?

चम्पा-(हँसकर) स्वास्थ्य तो बदस्तूर है। (चमेली की बात

लाया) ये तो कल रात को आई मैं आई आई हूँ। सुना कि मोहना भी यहाँ है तो मैं आई। फिर मालूम हुआ मोहना भी ४, ५ वर्ष से आई है ...मा ...भाग्य से ही प्राप्त हुआ है, अपनी प्यारी सखि है चलो मिल आवें। पहिले पूछा गई तो मालूम हुआ कि तुम यहाँ हो इसी से यहाँ ही चली आई।

मोहिनी-(हंसकर और प्रेम से गद्गद् हो) चलो अच्छा किया बहिनो, तुम दोनों को देख मैं बड़ी प्रसन्न हुई। माना मेरी सगी बहिनें ही आ मिलीं हों। सखियों, मेरे दुर्भाग्य से मेरे सगी बहिन तो है नहीं मैं तो तुम दोनों को ही सगी बहिनों से भी बढ़कर प्यार करती हूँ यह बड़ा अच्छा हुआ कि आप तीनों मिल गई अब तीनों ही के सम्मिलित होजाने से दिन बड़े आनन्द बहार से गुजरेंगे।

चमेली-(हंसकर) पर यदि तुम बीच में ही कहीं सैर सपाटे को चली गई तो ?

मोहिनी-(चौंककर) हैं, मैर सपाटा, किसके साथ ?

चमेली-(हंसकर) छिपाओ मत। बातें बनाओ मत। हमने सब सुना और देखा है।

मोहिनी-क्या सुना और देखा है ?

चमेली-यही अंगूठी का आदान प्रदान। और

मोहिनी-और क्या ?

चमेली—और चुम्बनालिंगन के आक्रमण का आरम्भ और ?

मोहिनी—और क्या ?

चमेली—और 'मानधान' वाले गायन में उसका कारण।

मोहिनी—वह मानधान पद्यांश का गायक कौन था।

चम्पा—(हँसकर) वह गायक, जिसका पता लगाने को तू ढूंढ ढूंढकर परेशान हो चुकी। पता न पा सकी। दुखित हो जिसको प्यारे शब्द से सम्बोधन किया वह तेरा गायक प्यारा तेरे सामने खड़ा है और तेरे रोष में भरे किया उसके लिये क्षमा माँग रहा है।

चमेली—[हँसकर] वह तो प्यारा नहीं प्यारी है। (दोनों का हँसना)

मोहिनी—[दुखित हो] क्या सच (लज्जित हो कुछ घबराकर) यदि सच ? तो, है ? हैं ? हाय भगवन् ? घोर अनर्थ।

चम्पा—अरी पगली, भड़हद कहीं की। क्या घोर अनर्थ ! घबराओ मत बाहन ! सबही के घर मिट्टी के चूल्हे हैं। धैर्य धरो। सच बात कहो। तुम्हारी बात गुप्त रक्खी जायेगी, हम प्रतिज्ञा करती हैं। तुम्हारी और हमारी बातें जब कि अपने परस्पर बहिनें हैं तो सबों की बात एक ही है। तुम्हारी उस समय की बातें भी कुछ अर्थ रखती हैं। ऐसा मुझे मालुम होता है।

मोहिनी—ठीक है। कहती हूँ सुनो ! वे हजरत मुझे बातों में फँसा, डरा, धमकाकर मेरा सतीत्व नष्ट करना चाहते थे

मैंने भी बहू का उसी के अनुसार बातों में फंसा वह मकान बाग दिखलाया कि वह भी याद करेगा। स्मरण रहेगा। अगूठा अवश्य लेते गया। और तुम्हारे जैसी पाप कार्य से ईश्वर ने तुम्हारे द्वारा मेरी रक्षा करवाई इसके लिये उसको और तुम्हें धन्यवाद है। जैसी उसके साथ बात की और व्यवहार किया यदि वैसा कर चिलम न करती तो इज्जत पर आ बनती। (अगूठी को देख) उस कुत्ते का यह अगूठा। [अगुली से निकाल पैरों तले रौंद] धत्तेरे कुत्ते की कह (फेंकती है)

चम्पा—ठीक है बहिन! यह पुरुष समाज, हमसे ऐसा ही दुर्व्यवहार और हम पर अत्याचार करता है। और समय समय पर दोषी भी हमहीं गिनी जाती हैं उनकी कारवाई अगुली तक उठाने वाला नहीं। खेद! महाखेद!! खैर—अपनी ससुराल की भी कुछ नयी बातें सुनाओ। दिल बहलाओ। यह भी बतलाओ कि पतिदेव कैसे हैं? व्यवहार कैसा है? प्रेम का क्या हाल है आदि।

मोहिनी—यदि तुम दोनों भी अपनी २ बीती बातें सच्चे दिल से कहना स्वीकार करो तो क्या मुझे कहने में कोई उज्र हो सकता है। कदापि नहीं। मैं भी तैयार हूं।

चमेली—[हंसकर] हम तो पहले ही कहने को तैयार हैं।

मोहिनी—तो पहले तुम्हीं शुरू करो।

चमेली—[हंसकर] नहीं पहिले चम्पा कहे। कहो बहिन!

चम्पा (कुछ उदास हो) अच्छा बहिन यहो सही। मेरा कथा ध्यान से सुनो।

चम्पा— गायन।

जो न सखियों! मैं न अपनी दुख कथा बतलाऊँगी।
तो कहाँ? फिर कह व्यथा, शान्ति मनमें पाऊँगी ॥१॥
हैं मेरे पतिदेव के, सुन्दर अनेकों नारियाँ।
तो हमारी पूछ कैसे, हो सके सुकुमारियां ॥२॥
प्रचार करती हैं सभी, छल, बल, कपट व्यापार का।
पति अन्य पै आशक्त हो, बाज़ार है व्यभिचार का ॥३॥

(नेत्र में अश्रु)

हा, देव ने कैसा बनाया, अबलाओं का भाग्य है।
सहतीं अनको यन्त्रणायें, नर्क सा दुर्भाग्य है ॥ ४ ॥

(रोकर)

इस दुर्दशा दयनीय को प्रभु, या तो जल्दी मेट दो।
अथवा सबों के प्राण पुष्पों की चरण में भेंट लो ॥५॥

[निश्वास डालना]

मोहिनी—प्यारी चमेली! तुम्हें तो अपने पति का पूर्ण सौख्य है न? कुछ कहो।

चमेली—(दुखित हो) अच्छा सुनो।

गायन—हमको मिले हैं वृद्ध बालम, उनकी सुना सी मैं लगू।
कुछ बात मत पूछो सखी, कहत हुए लज्जा मरू ॥१॥
वृद्ध पतिसे जो कुछ सुख मिल सकता है उसको जरा।

घर लौटा ही गया है, साथियो मेरी यही कथा है।
शोकावेग से और अधिक कहने में पूर्णतया असमर्थ हूँ। आशा है क्षमा करोगी।

(आँखों में अश्रु भर रुदन करना)

चम्पा-हाँ, मोहिनी! अब तुम कहो? तुम्हें तो हास विलास राग रङ्ग पति सुखोपभोग में चूर हो आनन्द आता होगा? सुसराल में तुमने तो मानो डेरा ही डाल रक्खा है? पाँच वर्ष! अरे बाप रे बाप! इतना लम्बा समय!

मोहिनी-प्यारी बहिनों! सुनो। हृदय मजबूत कर सुनो।

गायन।

"जब कभी मैं छेड़ती थी, मोद से परिहास से।
क्रुद्ध हो वे झिड़कते थे, रहित हो विश्वास से॥१॥

चम्पा-अरे! इससे क्या? यह तो किन्हीं २ पुरुष का रूखा स्वभाव ही होता है। प्रेम चाहिये, प्रेम!

मोहिनी-"प्रेम तो था दूर कोसों, थे बात करते लात से।
कहते, 'डायन आगई' गुजरेगी कैसे रात से?" ॥२॥

चमेली-अरी पगली! बलवान् अपनी सब शक्ति स्त्रियों पर ही तो आजमाते हैं। हैं तो बलवान्?

मोहिनी-बल का हाल सुनो।

गायन-"दश कदम चलना हुआ तो, हाँफना तन से भरा।
बातें अनेकों हैं- बड़ा, मैंने सुनाई हैं जरा॥३॥

चम्पा-प्यारी! धन, दौलत, ऐश्वर्य तो खूब है न?

मोहिनी—इनका लाभ क्या हम चाहें ? सुनो।

मोहन—"ऐश्वर्य सुख का क्या करें, बालक पति-पत्नि सुख नहीं।
जबतक न सहारा वह पहुँचे तो उन सुख तक नहीं ॥४॥
(जोर से रोना, रोते २ कहना)
इस सुता से मृत्यु है प्रभु हो कृपा तेरी अधिक।
नरकमें जीवन बितानी, हाय ! हमको हाय धिक् ॥५॥"
(रुदन)

प्यारी सखियो ! मैंने आज पहिले पहिल तुम से अपना यह दुख कहा कहीं है। और न किसी अन्य से ही कहा था। क्षमा है मुझ पर अनुग्रह करना। गुप्त रखना यथा साध्य छिपाना।

चम्पा—मैंने भी तो अपना दुख तुम से ही कहकर हलका किया है, जिसका ज्ञान कौन कहे, सब ही एक सी हैं।

चमेली—सखियो ! मैं कभी भी इस बात पर विचार कर रही हूँ कि विधि का विधान तो देखो, कि हम सब एक ही ग्राम और मोहल्ले में पैदा हुईं। एक साथ ही खेली कूदीं पढ़ीं लिखीं। विवाह भी करीब २ साथ ही हुआ। इसके पश्चात् सांसारिक सुख दुख भी समान रहा। अब पति सम्बन्धी सुख दुख भी तीनों ही का बराबर है।

चम्पा—और यह बराबरी न जाने कब तक साथ देगा ? हे ईश्वर ! तेरी लीला अपरम्पार है। तेरी इच्छा !

मोहिनी—प्यारियो ! इसमें ईश्वर क्या करे ? उसने सभों को बुद्धि दी है, उसको काम में लाकर भला बुरा विचार शक्ति प्रदान की है। हम उसका दुरुपयोग कर रहे हैं।

देश में फैली अज्ञानता, रूढ़ियाँ कुरीतियाँ बालिकाओं के विषय में पुरुषों की उदासीनता उपेक्षा, माता पिता की लापरवाही आदि ये ही सब हमें रसातल में झोंकती हैं। कोई उक्त बातों के प्रतिकार का प्रयत्न नहीं करता। इस विषय में स्त्रियाँ हमारी माताओं का हठ ना और भी गजब ढा रहा है। ईश्वर दयालु और न्यायी है। उसका कुछ भी दोष नहीं। यह सब हमारे पालन और समाज का दोष है।

चम्पा—सत्य है बहिन सत्य है। ईश्वर सब को सुबुद्धि प्रदान करे।

मोहिनी—प्यारी बहनो! आज मैं तुमसे अकस्मात् मिल बड़ी प्रसन्न हुई। मेरी यह अन्तिम इच्छा भी पूर्ण हुई। आशा परिवार और तुमसे मिल ली, न जाने फिर मिलना कब हो या न हो। अब मैं अपने जीवन से बिलकुल ही निराश हो चुकी हूँ। मेरा चित्त न जाने कैसा हो रहा है। ऐसी स्थिति में आज इस बाग में हो दो चार पदार्थ यत्नपूर्वक ऐसा भी नहीं है कि पास में अपना सुहृद किसी को नहीं दिखा सकती, तेरे प्रकाशन द्वारा से हृदय में अचानक कलंक लगने का भी डर है, इस कारण मैं ईश्वर से दया चाहती हूँ (पास बोड़ कर) आशा! आशा! एक बार और मिल लो।

(दोनों बालिकाओं का आश्रय ले चम्पा कुछ बातें आरम्भ करती हैं मोहिनी की देह पर हाथ फिराती चारों

नरदत्त इसके पहिले हा पीले रंग की एक तरल पदार्थ की डाटा शीशा निकाल उसकी दोचार बूंदें पीना कुछ दूर में बेसुध गाना)

दाता–(घबड़ाकर हाथ पकड़) अरी पगली ! यह क्या अनर्थ किया ! अन्त में तेरी यह दशा ! हाय ! भगवान ! (रोना का गाना) ~

मोहिनी–[उसुध दशा में] बस, अब बस ! नर्क से त्राण !! इस शोकमय संसार से मुक्ति ! हे ईश्वर ! अपना पर अबाध पुत्री की हार्दिक कमजोरी को क्षमा करना। प्यारे पति ! हमारे प्राणाधार ! प्यारी सखियों ! माता, पिता, सास ससुर, सब ही परिजन मुझे हृदय से क्षमा देना। ईश्वर ! आप जानते हैं कि मैं हृदय से निर्दोष हूँ। पूज्य पिता। आप तो अवश्य ही क्षमा करेंगे ऐसी आशा है। प्यारी सखियो ! यह देश के नेताओं, पञ्चों से की गई अपील भी पत्र उन तक [कहते कहते गिरना] बेहोशी बढ़ना–गला सूखना–पा नी , (हिचकी)

चम्पा–प्यारी चमेली ! मालूम होता है कि इसने उस विष का पान किया है। क्या करें ! हम दोनों मोहिनी से किसबात में सुखी हैं वह आशा हमारे भी दुःखों का अन्त करने के लिये हमारा भी आवाहन कर रहा है। एक न एक दिन हमको भी इसी मार्ग का पथिक बनना पड़ेगा। तो आज ही यह स्वर्णयोग क्यों जाने दें। प्यारी सखि का साथ क्यों छोड़ें ? (शीशी उठाना)

चमेली—(गोकर) यदि [मगन ही न क्या होगा ?
चम्पा—[गर्वस] अब जाना जाता है। [इ; मन स निश्च शांति मिलेगा। नेताओं और युवकों में कुरीति निवारण और सुधार करन अबलाओं और कन्याओं की दशा सुधार न का शांत बढ़ेगी। कुरीति देवी की बलि वेदी पर पवित्र युवक—युवतियों का बलिदान ही फल देता है व्यर्थ नहीं जाता। (मालिनाक पत्रको पढ कुछ ठीकठाक नहीं करना) लग इच्छा, मैं ना चला। [वह हाथ छुड़ा शीशी का पदार्थ पान करना—हे ईश्वर ! भूली भटका पुत्रा का क्षमा] (बेहोश होना)
चमेली—हाय नाथ मैं भी क्या न चलू। पीछे क्या रहूँ। [पत्र पर हस्ताक्षर कर पदार्थ पान करना, दोनों का क्षण भरमें बेहोश होना] [ड्रापसीन]

(अंक तीसरा दृश्य तीसरा पूर्ण)

मोहन-मोहिनी.

अंक तीसरा—दृश्य चौथा।

स्थान—जोधपुर, सेठ माधवप्रसाद का जनाना कमरा मोहन खाट शय्या पर पड़ा है। पास में माधव, मालती सुरेशचन्द्र पण्डित सुशीलमन पहलवान, सुमतिनाथ आदि बैठे हैं। सबों के मुह उदास हो रहे हैं।
मोहन—(मन्द स्वर से) हाय ! सारा शरीर और सिर में दर्द बाद

[अ]स्तु इसके पहिले ही ... पीले रंग की एक तरल पदार्थ की छोटी शीशी निकाल उसकी दो चार बूंदें पीना कुछ देर में बेसुध होना।)

[illegible]—(घबड़ाकर हाथ पकड़) अरी पगली ! यह क्या अनर्थ किया ! अन्त में तेरी यह दशा ! हाय ! भगवान ! (रोने लगना)

मोहिनी—[व्याकुल दशा में] बस, अब बस ! नर्क से त्राण !! इस शोकमय-दुःखमय संसार से मुक्ति ! हे ईश्वर ! अपनी एक अबोध पुत्री की हार्दिक कमज़ोरी को क्षमा करना। प्यारे पति ! हमारे प्राणाधार ! प्यारी सखियो ! माता, पिता, सास-ससुर, सब ही परिजन मुझे हृदय से क्षमा देना। ईश्वर ! आप जानते हैं कि मैं हृदय से निर्दोष हूँ। परम पिता ! आप तो अवश्य ही क्षमा करोगे ऐसी आशा है। प्यारी सखियो ! यह देश के नेताओं, पञ्चों से की गई अपील का पत्र उन तक ... [कहते कहते गिरना] बेहोशी बढ़ना—गला सूखना—पा... ... , (हिचकी)

कृष्णा—प्यारी चमेली ! मालूम होता है कि इसने उग्र विष का पान किया है। क्या करें ! हम दोनों मोहिनी से विश्वास में सुखी हैं यह शीशी हमारे भी दुःखों का अन्त करने के लिए हमारा भी आवाहन कर रही है। एक न एक दिन आपको भी इसी मार्ग का पथिक बनना पड़ेगा। तो आज ही यह सुयोग क्यों खो दें। प्यारी सखि का साथ क्यों छोड़ें ! (शीशी उठाना-)

चमेली-(रोकर) बहिन! मेरा हाल क्या होगा?

वन्दा-[गर्वसे] अब जाती जाता है। तुझे मरने से निश्चय शांति मिलेगी। मैनाओं और युवकों में कुरीति निवारण और सुधार करने अबलाओं और कन्याओं की दशा सुधारने का काम चलेगी। कुरीति-देवी की बलि वेदी पर पवित्र युवक—युवतियों का बलिदान ही कर देना है व्यर्थ नहीं जाता। (मोहिनी पत्रको पढ़ कुछ ठीककर सही करना) मेरा इच्छा, मैं ना चली। [वह हाथ छुड़ा शीशी का पदार्थ पान करना-हे ईश्वर! भूली गलत पुत्री का ख्याल] (बेहोश होना)

चमेली-हाय साथ में भी क्या न चलूं। पीछे क्या रहूँ। [पत्र पर हस्ताक्षर कर पदार्थ पान करना, दोनों का हाथ भरी बेहोश होना] [ड्रापसीन]

(अंक तीसरा दृश्य तीसरा पूर्ण)

मोहन-मोहिनी.

अंक तीसरा—दृश्य चौथा।

स्थान-जोधपुर, सेठ माधवप्रसाद का जनाना कमरा मोहन का शय्या पर पड़ा है। पास में माधव, मालती, सुरेशचन्द्र पाठक, सुशीलचन्द्र पहलवान, सुमतिलाल आदि बैठे हैं। सबों के मुंह उदास हो रहे हैं।

मोहन—(कराहते) हाय! मेरा शरीर और सिर में दर्द

है। गला सूख रहा है। जबान खिंची जा रही है। पानी।

सेठ माधव० [पानी पिलाकर] मोहन ! प्यारे मोहन ! सर्जन बड़े साहब तुम्हें देख गये हैं, घबराओ मत।

मोहन–[बेहोशी की हालत में] क्या कहा ? कौन आया ? क्या मोहिनी आगई ! कहाँ है ! प्यारी चलो ! क्या तू भी साथ चलना कहती है ? यदि चलना हो तो जल्दी कर ! आ प्यारी ! आ !!

सेठ माधव०–बेटा ! [शरीर पर हाथ फेरकर] लोको जयपुर आदमी भेजा है। शीघ्र ही आने वाली है।

सुरेशचन्द्र पाठक–सेठ साहेब ! अब मोहन की तबियत कैसी है ! सर्जन साहेब को बुलाया था आप कहते थे क्या वे देख गये ?

सेठ माधव०–तबियत की दशा तो आप देख ही रहे हैं सर्जन साहेब भी देख गये हैं। उनकी राय में तो घड़ी आध घड़ी का मेहमान और है। आगे ईश्वर मालिक है। (रोना)

सुरे० पाठक–सेठ साहेब धैर्य धारण करो। ज्ञान से काम लो। ईश्वर सबका रक्षक है।

सुशीलचन्द्र–आपने अपने कर्त्तव्य का पालन किया, खेद करना व्यर्थ है।

सेठमाधव०–अगर मैं, अपने कर्त्तव्य का पूर्ण पालन करता तो–मेरी हार्दिक इच्छानुसार कार्य होता तो मोहन की यह दशा नहीं होती। मालती ! देख आ ! मोहन का बचपन में विवाह कराने और पौत्र का शीघ्र ही मुख देखने की भूख इसकी प्यारी दुलारी माँ ! 'हाय बाल विवाह का

दुष्परिणाम !" मदन ! साहेब का यहाँ सुनी या नहीं !

[मोहन की ओर मनन]

मालती—कुछ भी अस्पष्ट है और न गाना।

[नौकर का प्रवेश]

नौकर—सेठ साहेब ! जयपुर गया हुआ आदमी पत्र ले कर लौट आया है।

सेठ माधव—क्या उसके साथ दुलहिन नहीं आई !

नौकर नहीं।

माधव०—(चिन्तित हो) अच्छा जा। पत्र ले आ। (नौकर का पत्र लाकर देना) पत्र पढ़कर बेहोश होना।

सुरेशचन्द्र—(सेठ जी के मुह पर गुलाब जल छिड़कना हवा करना, उनका हाथ में थामना) सेठ साहेब, धैर्य धारण करो। पत्र पढ़ने हो ऐसा क्यों हुआ !

सेठ जी—मैं दावा के बहकावे तथा हठ में फँस हुए रहता तो मेरी आज यह दशा न होती। (सर पीटना)

सुमतिलाल—(आश्चर्य से) पत्र में क्या है ?

सेठजी—[रोकर] होगया वही डहडहाती कोमल मल्लिका की सुन्दर कलियों पर असामयिक वज्रपात होगया और यहाँ भी मनुष्य के रूप के दरपायुन के समान पागल-कुसुम पर शाखाघात होना चाहता है। (रुदन)

मोहन—मामा जी ! (कुछ ठहर कर) मुझे स्वप्न आया है कि मोहिनी मेरे पहिले ही स्वर्ग में पहुँच गई और वह वहाँ से मुझे एक पत्र बतला रही है और अपने पास बुला

रहा है। कोई पत्र यदि आया हो तो मुझे देकर मेरी आन्तम इच्छा पूर्ण करो। जाओ।

माधव०-(हां पुत्र पत्र आया है पत्र दे) लो पुत्र पढ़ो, किसी प्रकार की इच्छा मन न रखना।

मोहन-(पिता जी! अब मुझे जरा तकियेके सहारे बैठा दीजिये इस समय मेरा चित्त बहुत आनन्दित है। मानो मैं बहुत जल्दी अच्छा हो जाऊंगा। मेरे शरीर में बल और साहस आता मालूम देता है। (तकिये के सहारे बैठना) अच्छा तो पत्र पढ़ूं? आप सब भी सुनेंगे? (पत्र जोर से पढ़ना) (शिद्दाप का संचार उसके जोश में)

पत्र की नकल। मु० जयपुर।

ता० १-२-२५ ई०।

श्रीयुत् सेठ साहिब माधवप्रसाद जी, जोधपुर की सेवा में।

मान्यवर!

सप्रेम सादर अभिवादन! अपरञ्च समाचार यह है कि आपने अपना मनुष्य पत्र दे 'मोहिनी' को लिवा ले जाने के हितार्थ भेजा। किन्तु बड़े ही खेद के साथ लिखना पड़ता है कि मेरी प्यारी, दुलारी, आंखों की पुतली मोहिनी परसों सायंकाल के समय दुर्द्धर्ष काल का ग्रास बन गई। हमें बिलखते छोड़ चली गई। उसकी मृत्यु बगीचे के अन्दर हुई है और आश्चर्य यह है कि उसकी दो बचपनकी साथी सहेलियां जो कि दो चार दिन पहिले ही अपने २ ससुराल से वापिस आई थीं-वे भी उसी हालत में पाई गई हैं। तीनों परस्पर

गलबहियाँ डाले पड़ी थीं, मानों दोनों साथ ही स्वर्ग जा रही थीं। घटना आश्चर्य जनक और मृत्यु का कारण अज्ञात है। पुलिस बड़ी सरगर्मी से जाँच कर रही है। जाँच अभी जारी है। यदि सरकार द्वारा जाँच में बाधा न पड़ी तो हम द्वारा शीघ्र ही कुँवर साहेब का देखने आवेंगे उनका बीमारी का हाल पढ़ चित्त बड़ा ही चञ्चल और व्याकुल हो रहा है।

कुँवर साहेब का आजकल का अब क्या हाल है सूचित करें। पत्र लिखें।

नोट—लाशों के पास ही एक पत्र मिला है जिसमें कि कुछ पद्य का लाइनें लिखी हैं। उसके नीचे तीनों की सही है। वह भी भेजा जाता है। सम्भव है मृत्यु के साथ उसका सम्बन्ध हो। शायद आप उसका कुछ और भी गहन अर्थ निकाल सकें इस कारण वह भी सेवा में भेजा जाता है।

आपका दास—नारायणचन्द्र गुप्त।

सुन लिया! पत्र सबों ने सुन लिया! अच्छा अब लाशों का कविता भी सुनिये। पिता जी पुर्जा दीजिये। (माधवप्रसाद का पुर्जा देना) प्रसंग मन में पढ़ फिर (प्रकट) इसमें तो तीन विषय हैं। १-युवकों का सन्देश, २-नेताओं से विनय, ३-अन्तिम प्रभु प्रार्थना। (रुक कर) थोड़ा पानी पिताजी—(माजता का पानी पिला) पानी पीने के बाद-जोर से।

"युवकों को सन्देश"

"हम तीनों अबाध और निर्दोष युवतियों का एक साथ ही कुरीति दुष्टों का बलिवेदी पर बलिदान होते देख अपना दशा पर दशा सुधारो।"

"नेताओं से विनय"

(त्रिदोष कुपित होने के कारण गाकर जोर से पढ़ना)

* गायन *

मान्यवर नेता ! विनय सुनो, मान्यजन नेता विनय सुनो० ॥टेक॥

महाराष्ट्र, पञ्जाबी, जैनी, मारवाड़ी, बंगाली । ।
गुजराती कुछ अन्य प्रान्तक तज रहे व्यर्थ कुचाली ॥
इन्हें लक्ष करो, कार्य सुजनों । मान्यवर नेता ! विनय सुनो ॥१॥

बदला और दहेज प्रथा पुनि बाल वृद्ध का व्याह ।
इनने मिल सब चौपट कर दिया होवे कहाँ निर्वाह ?
योग्य हो बात उसही चुनो । मान्यवर नेता ! विनय सुनो० ॥२॥

आर्य जाति की समुचित उन्नति, होवे और सुधार ।
इन बातों पै लक्ष्य दीजिये, हो कुछ बेड़ा पार ॥
कहा यह करो न प्रिय असुनो ! मान्यवर नेता ! विनय सुनो ॥३॥

भाषा, भेष, भाव अरु होवे निज मत ही में प्रेम ।
भूले देश भ्रात ना इनको निश्चय करले नेम ॥
इसका यत्न हृदय में गुनो । मान्यवर नेता ! विनय सुनो० ॥४॥

मिटै अविद्या-रात्रि, सूर्य का होवे ज्ञान प्रकाश ।
होवे 'लक्ष्मी' तबही अपनी देशोन्नति की आश ॥
उच्चादर्श सबा के बनो, मान्यवर नेता ! विनय सुनो० ॥५॥

अरे ! थोड़ा पानी पिलाओ ! गला सूख रहा है। कुछ गाने और हैं। प्रार्थना है।

गायन—"है विनय कर जोड़कर वनिता अर्थी की आप से ।
उन्मत्त या पथभ्रष्ट समझा, मरतीं कुरीति ताप से ॥१॥
मरतीं हुई की छटपटानि करना न प्यारा ! अनसुनी ।
मेटना कर यत्न उनको हममें बचें उस पाप से ॥२॥
हे प्रभो ! जग के पिता ! करना क्षमा बमजारिया ।
इस आत्महत्या पाप से जो हम मरीं सुकुमारियां ॥३॥

मोहन—पिताजी ! खूब थकावट जान पड़ती है। जरा और पानी (पानी पी) हे राम ! हे प्यारी मोहिनी ! तुझे धन्य है जो मेरे पहिले ही मेरे स्वागतार्थ स्वर्ग में पहुंच चुकी। मैं तुझे यहां सन्तुष्ट न कर सका अस्तु अब वहां आकर अवश्य करूंगा। वहां यहां के समान कुरीतियों का लेश भी नहीं है। पानी—पानी—पा (पानी पी) ओ हो ! तीनों देश से कुरीतियों को मिटाने के लिये, युवकों, नेताओं और देशवासियोंसे प्रार्थना कर गई हैं—मर्मस्पर्शी चिट्ठी सुना गई हैं कुरीति देवी की बलिवेदी पर बलिदान होगई हैं। मैं भी होने को तैयार हूं। यदि आप सब उपस्थित सज्जन, हम चार प्राणियों का बलिदान देख, कुछ शिक्षा ग्रहण करें, देश से कुरीतियों के मेटने का हृदय से आश्वासन देवें तो मैं सुख से प्राण विसर्जन करूं और हम चारों की आत्माओं को भी स्वर्ग में शांति मिले।

पंडित सुरेशचन्द्र पाठक—[सब उपस्थित सज्जनों से सलाह कर सबों की ओर से] प्रिय मोहन ! हम सब ईश्वर को साक्षी दे धर्मपूर्वक हृदय से प्रतिज्ञा करते हैं कि

"तुम सबों की अन्तिम इच्छानुसार ही हम सब कुरीतियों का मूलोच्छेद करने और तन, मन, धन से देश, जाति और समाज की सेवा करने के हेतु कटिबद्ध हैं। आप हृदय में शांति धारण करिये।

मालती—(रोकर) पुत्र मैं भी प्रतिज्ञा करती हूँ कि आजही से मेरे समान मूर्खा, वृद्धा माताओं, बहिनों को "बाल विवाह" तथा अन्य कुरीतियों की हानियाँ बतला सदा को ऐसे कार्यों से सदैव रोकती रहूँगी।

मोहन—(पार्वती को प्रसन्न देख) बहुत अच्छा। पिताजी, माताजी गुरु मित्र, सम्बन्धी आदि सब ही क्षमा करिये। ईश्वर से प्रार्थना है कि हम बलिदान होने वाले सब प्राणियों को वह शीघ्र ही भारत में पुनः जन्म देवे ताकि हम भी उनकी सेवा कर सकें। अन्त प्रणाम — ईश्वर स व' ध। स' द्व वु'' द्वि द व।

('हरि ओ३म् कहता हिचकी के साथ 'ही प्राणान्त')

[इतने ही में टेलीग्राम का आना उसमें कह दी ...ाठौं के राजगार में ६० हजार की हानि का पढ़ बसुध होना होश में आने पर निश्चिन्त होने के लक्षण दिखाई देना]

मालती— (रोकर) हा! मेरी ही मूर्खता दुराग्रह के कारण "बालविवाह" के ही फल स्वरूप यह सत्यानाश, [और होना पूर्ण] कर दिया। हे प्रभु! रक्षा करें!!

* समाप्त * (पटाक्षेप)